जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी, रविवार 1 सितम्बर, 2024

(विज्ञापन)

माफीनामा

कल के विज्ञापन में "थोथे थानेदार" शब्द को "उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे" जैसी ही एक लोकोक्ति के सन्दर्भ में न लेकर बच्चों के माता-पिता के संदर्भ में लिखे हमारे जज्बातों का अनर्थ निकाले जाने से मन काफी व्यथित है। पुलिस विभाग की भूमिका हमारे समाज में अति महत्वपूर्ण है। जब पुलिस जागती है, तब हम सभी सुरक्षित और चैन की नींद सो पाते हैं। उनके सहयोग से ही हमारा व्यापार और समाज सुचारू रूप से चलता है। हमारा उद्देश्य किसी भी प्रकार से पुलिस विभाग या किसी अन्य जनमानस को ठेस पहुंचाने का नहीं था बल्कि संवेदनात्मक व्यापारिक जागरूकता फैलाना था। यदि पुलिस या किसी अन्य जनमानस को इस विज्ञापन से कोई दुःख पहुंचा है, तो हम सहृदय क्षमाप्रार्थी हैं। हम इस विषय पर विराम लगाते हुए पुनः इसके लिए क्षमा चाहते हैं। हमारा मानना है कि पुलिस विभाग की गरिमा सर्वोपरि है, और हम ऐसा कोई व्यापार नहीं चाहते जिससे उनकी प्रतिष्ठा पर किसी भी प्रकार की आँच आए। इसीलिए, हमने इस विषय को विज्ञापन में सबसे प्रमुख स्थान पर रखा है, ताकि हमारा संदेश स्पष्ट हो और किसी तरह का गलत अर्थ न निकाला जाए।

आजकल लोग प्रीमियम लोकेशन के चक्कर में महंगे से महंगे घर खरीद रहे हैं लेकिन जब बात आती है बच्चों के खेलने और उनके संपूर्ण विकास की, तो यह घर एक कंक्रीट के जंगल के अलावा कुछ नहीं है। न आउटडोर गेम्स, न क्लब हाउस, न स्पोर्ट्स एमेनिटीज और न ही जरूरी सुविधाएं—नतीजा ? बच्चे मोबाइल, टैबलेट या लैपटॉप पर ही गेम्स खेलकर अपना बचपन बर्बाद कर रहे हैं। इस डिजिटल दुनिया का असर इतना गहरा हो गया है कि कई बच्चे बिना स्क्रीन देखे खाना तक नहीं खाते, और उनकी माताएँ उन्हें वीडियो दिखाकर खाना खिलाने को मजबूर हैं।

कभी हृष्ट-पुष्ट होने वाले भारतीय बच्चे आज शारीरिक रूप से कमजोर और मानसिक रूप से विकृत हो रहे हैं। यह दुखद है कि शहर की प्रीमियम लोकेशन में रहने और नामी स्कूलों में पढ़ने के बावजूद, वे सम्पूर्ण विकास से वंचित हैं।

आजकल अधिकतर बच्चे लगभग 5-10 साल की कच्ची उम्र में अनजाने में अपनी आँखें फोड़कर ज़िन्दगी भर के लिए चश्में का गिफ्ट ले लेते हैं, जिसके जिम्मेदार इनोसेंट बच्चे नहीं बल्कि उनके माता-पिता हैं, जिन्होने बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास की ज़रूरत समझे बिना सिर्फ अपने स्टेटस के लिए या अपनी सुविधा के लिए सिर्फ प्राइम लोकेशन के चक्कर में बिना किसी आउटडोर गेम्स या स्पोर्ट्स एमेनिटीज वाला कंक्रीट का घर लिया था, क्या भरे ट्रैफिक की चिल्ल-पौं में प्राइम लोकेशन पर घर खरीदकर आपको गिनीज बुक में नाम लिखवाना था ?

केडिया सेजस्थान में 60 शानदार सुविधाओं में से 40 सुविधाएं खासतौर पर बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए हैं। यहां आपको वो सब कुछ मिलेगा जो आपके बच्चों के स्वस्थ भविष्य के लिए जरूरी है—आउटडोर गेम्स, इंडोर गेम्स, और स्पोर्ट्स सुविधाएं। क्योंकि हम कंक्रीट के जंगल वाला घर नहीं बल्कि एक वाइब्रेंट लाइफस्टाइल बेचते हैं।

AMAZING SETUP FOR KIDS AT KEDIA SEZASTHAN

SPORTS AMENITIES

• BASKET BALL COURT • BADMINTON COURT • SKATING RINK • LAWN TENNIS COURT
• MINI GOLF • CRICKET PRACTICE NET • BOX CRICKET • JOGGING LOOP • CYCLING TRACK

OUTDOOR AMENITIES

• RASHI GARDEN • OPEN AIR THEATRE • WETLAND PARK • KID'S PLAY AREA • SANDPIT
• OPEN GYM • LAP POOL • KID'S POOL • ROOF TOP WALK • MULTI PURPOSE LAWN
• MEDITATION ZONE • VOCATIONAL WORKSHOP SPACE • SENSORY WALK • NATURE TRAIL
• SAVANNA ELEVATED TRAIL • PICNIC POINTS • ADVENTURE PLAY AREA

INDOOR AMENITIES

• TUITION ROOM • LIBRARY • ART AREA • KID'S WORKSHOP AND PLAY AREA
• DISNEY THEME GAME ROOM • CONFERENCE ROOM • GYMNASIUM • YOGA AREA
• CARD AREA • CHESS AREA • CARROM AREA • TABLE TENNIS • BILLIARDS

KEDIA सेजस्थान
KOTHI & WALK-UP APARTMENT
अजमेर रोड़, जयपुर

बड़ी-बड़ी कोठी
बड़े-बड़े फ्लैट

KEDIA®

1800-120-2323
78770-72737

info@kedia.com
www.kedia.com

www.rera.rajasthan.gov.in
RERA No. RAJ/P/2023/2387

SCAN QR FOR
• LOCATION
• ROUTE MAP
• SITE 360 TOUR
• E-BROCHURE
• WALKTHROUGH

*T&C Apply

विचार बिन्दु

मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे और समुद्र के समान गंभीर होते हैं। उनका पार पाना कठिन है। –माघ

हिमाचल की गोद में एक रोमांचक यात्रा

हिमालय की दुर्गम चोटियों और बर्फीली घाटियों की ओर जाने का विचार ही हमें उत्साह से भर देता है। इस बार, मैंने और मेरी पत्नी पुष्पा पाण्डेय ने हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति की यात्रा का फैसला किया। हमारे साथ इस यात्रा में हमारा बेटा पुष्प दीप पाण्डेय भी था, जो अपनी मोटरसाइकिल पर 2200 किलोमीटर की साहसिक यात्रा पर निकला। इस यात्रा में न केवल हिमालय की अद्वितीय सुंदरता को देखने का अवसर था, बल्कि इस क्षेत्र के अनूठे पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से भी रूबरू होना था।

जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का घना जंगल, जिसमें देवदार, ओक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ के वातावरण को शीतलता और हरियाली से भर देता है। लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, इस हरियाली का स्वरूप धीरे-धीरे बदलने लगा। देवदार और ओक के पेड़ों की जगह फर और चीड़ के पेड़ों ने ले ली। यह परिवर्तन ऊँचाई का संकेत था, जहाँ जीवन की परिस्थितियाँ और भी कठिन हो जाती हैं।

शिमला से आगे बढ़ते हुए, करीब 100 किलोमीटर के बाद हमें सेब के बागान दिखाई देने लगे। ये बागान हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं। लेकिन इन बागानों के बीच भी हमें यह महसूस हुआ कि जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं। सेब की खेती में चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं, फिर भी किसानों का आत्मविश्वास और उनकी मेहनत हमें प्रेरित करती रही।

जैसे ही हम पूह की ओर बढ़े, सेब के बागानों ने हमें अपनी सुंदरता से मंत्रमुग्ध कर दिया। पिछली यात्रा में हमने देखा था कि हर पेड़ सेबों से लदा हुआ है, और उनकी लालिमा सूरज की किरणों में चमक रही है। यहाँ के किसान हमें बताते हैं कि हिमाचल प्रदेश भारत के कुल सेब उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत योगदान देता है। लेकिन बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने फसल की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। इस बार की यात्रा में हमने फूलों से लदे सेव के बागान देखे। मज़ा आ गया।

किसानों ने हाई-डेंसिटीप्लांटेशन और ड्रिपइरिगेशन जैसी तकनीकों का उपयोग कर उत्पादन में सुधार किया है। जब हमने इन किसानों से बात की, तो उनकी चुनौतियों और उनके प्रयासों को सुनकर हम समझ पाए कि इस लाल सोना को उगाने में कितनी मेहनत और धैर्य लगता है। लेकिन इस बीच, बादलों ने आसमान को घेर लिया और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने हमारी यात्रा को और भी रोमांचक बना दिया।

पूह में रुककर हमने हिमाचल के स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया। थुकपा (नूडलसूप) की गर्माहट और मोमोज़ का अनोखा स्वाद ठंडी हवा में बहुत सुकूनदेह था। साथ ही, हमें चंग (तिब्बती बीयर) का स्वाद भी मिला, जो यहाँ की ठंडी जलवायु में शरीर को गर्म रखने का एक पारंपरिक तरीका है।

हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा तब शुरू हुआ, जब हम लाहौल और स्पीति घाटियों में प्रवेश करने लगे। चंद्रा और भागा नदियों का साथ हमें उनके बहाव की शक्ति और सुंदरता से रूबरू कराता रहा। चंद्रा और भागा नदियाँ तांदी में मिलकर चंद्रभागा (चेनाब) नदी का निर्माण करती हैं, जो आगे जम्मू और कश्मीर की ओर बहती है। इन नदियों का प्रवाह उन कठिनाइयों का प्रतीक था, जिनका सामना यहाँ के लोग हर दिन करते हैं।

स्पीति नदी, जो इस क्षेत्र की जीवनरेखा है, अपनी शांत धारा के साथ बहती हुई स्पीति घाटी को सींचती है। लेकिन इन नदियों का पानी भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है। ग्लेशियरों के पिघलने की दर में वृद्धि और बर्फबारी में कमी ने इन नदियों के प्रवाह को कम कर दिया है, जिससे यहाँ के लोगों को जल संकट का सामना करना पड रहा है।

काजा की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में अचानक से मौसम बिगड़ गया। बादलों ने घेर लिया और बारिश के साथ बर्फबारी भी शुरू हो गई। रास्ते में ढलान से गिरते पत्थरों ने हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम काजा पहुँचे, वहाँ का शांत वातावरण और आध्यात्मिकता ने हमारे मन को शांति दी।

हिमालय की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित है। और यह संतुलन ही हमें एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का घना जंगल, जिसमें देवदार, ओक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ के वातावरण को शीतलता और हरियाली से भर देता है।

काजा में स्थित के मठ की ऊँची चट्टान पर स्थित भव्य संरचना देखी। यह मठ तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र है, जो एक हजार साल से अधिक पुराना है और यहाँ की संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है। हमने यहाँ के बाजारों में स्थानीय हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र, और तिब्बती कला के नमूने देखे, जो यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिब्बती नववर्ष के उत्सव के अनुभव भी सुनने को मिले। हमें बताया गया कि गाँवों में एक अद्भुत ऊर्जा और उत्साह का संचार हो जाता है। लोग पारंपरिक परिधानों में सजे-धजे, मठों में प्रार्थना करने जाते हैं। नाच-गाने और पारंपरिक संगीत के साथ,यह उत्सव हमारी यात्रा को और भी जीवंत बनाता है। लोसर के दौरान लोगों की आस्था और उनके धार्मिक अनुष्ठानों को देखना ऐसा अनुभव होता है, जो आत्मा को गहराई से छू लेता है। इसे अगली बार देखेंगे।

काजा से आगे बढ़ते हुए, हमने नाको का रुख किया। यह छोटा सा गाँव, जिसकी झील समुद्र तल से 3,662 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, हमें एक अलग ही दुनिया में ले आया। नाको झील का पानी इतना साफ और शांत था कि उसमें आकाश का पूरा प्रतिबिंब देखा जा सकता था।

यहाँ का वातावरण इतना शांत और पवित्र था कि हमने कुछ समय यहाँ की शांति का आनंद लेते हुए बिताया। लेकिन इस क्षेत्र में भू-स्खलन और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ भी हैं, जिनसे इस प्राकृतिक धरोहर को खतरा हो सकता है। नाको की इस यात्रा ने हमें हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता का गहरा अनुभव कराया, लेकिन साथ ही इन स्थानों के संरक्षण की आवश्यकता का भी एहसास दिलाया।

लाहौल और स्पीति के इस कोल्डडेजर्ट क्षेत्र में स्थित पिनवैली नेशनल पार्क एक और प्रमुख आकर्षण है। यह नेशनल पार्क 675 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और यहाँ की वनस्पति और जैव-विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के वन्यजीवों में स्नोलेपर्ड (हिम तेंदुआ), साईबेरियनआईबेक्स, तिब्बती वुल्फ और हिमालयीमार्मोट प्रमुख हैं।

पिनवैली में यात्रा करते समय हमें इस क्षेत्र की अनूठी वनस्पति भी देखने को मिली। यहाँ की वनस्पति में सीबक्कथोर्न प्रमुख है, जो इस क्षेत्र की कठोर परिस्थितियों में जीवित रहती है। इस पौधे के फल विटामिन सी से भरपूर होते हैं और इसका उपयोग औषधीय उत्पादों और स्वास्थ्य वर्धक पेय बनाने में किया जाता है। यहाँ के लोग इसे लेह बेरी के नाम से जानते हैं और इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में भी करते हैं।

नाको की यात्रा के दौरान हमें कई छोटे और बड़े झरनों का भी अनुभव हुआ, जो हिमालय के हृदय से निकलते हैं और इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। इन झरनों का पानी बर्फ की तरह ठंडा था, जो सीधे हिमालय की बर्फ से पिघलकर आता है।

इन झरनों के बीच, हम चांगो झरना पहुँचे, जो नाको के निकट स्थित है। यह झरना न केवल पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए जल का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि इन झरनों का प्रवाह भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है, जिससे इस क्षेत्र के जल स्त्रोतों पर दबाव बढ़ता जा रहा है।

पिनवैली में रात गुज़ारना एक और अद्भुत अनुभव था। हिमालय की ऊँचाइयों पर, ठंडी रात में जब आसमान तारों से भरा हुआ था, हमने एक अद्वितीय शांति का अनुभव किया। यहाँ की रातें इतनी शांत होती हैं कि बस प्रकृति की हल्की आवाज़ें ही सुनाई देती हैं। हम सभी ने ठंडी रात में आग जलाकर गरमागरम चाय पी और आसमान में बिखरे तारों को निहारते हुए इस बात का एहसास किया कि हम कितने भाग्यशाली हैं, जो इस अद्वितीय स्थान पर हैं।

इस यात्रा के दौरान हमें कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। जैसे कि अचानक मौसम का बदलना और सड़कों की खराब हालत। ऊँचाई के कारण साँस लेने में भी कभी-कभी परेशानी होती थी। एक बार, ढलान से गिरते पत्थरों के कारण हमें कुछ समय के लिए रुकना पड़ा। लेकिन इन सभी चुनौतियों ने हमें यह सिखाया कि हिमालय की यात्रा केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं होती, बल्कि यह एक जीवन का पाठ भी है, जहाँ हर कदम पर आपको अपनी धैर्य और संकल्प की परीक्षा देनी होती है।

पूह, काजा, और नाको जैसे इलाकों में पर्यटन बढ़ रहा है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को तो फायदा हो रहा है, लेकिन पर्यावरण पर इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। 2018 में, हिमाचल प्रदेश में पर्यटकों की संख्या 1.7 करोड़ तक पहुँच गई थी, जो राज्य की आबादी से अधिक है।

पर्यटन से होने वाले लाभों के साथ-साथ इसके नकारात्मक प्रभावों का भी ध्यान रखना आवश्यक है। अधिक पर्यटकों के आने से कचरे की समस्या बढ़ रही है, और स्थानीय संसाधनों पर दबाव भी बढ़ रहा है। इसके अलावा, इन इलाकों में हो रहे निर्माण कार्य और सड़क विस्तार भी पर्यावरण के लिए एक चुनौती बने हुए हैं। हमारी इस यात्रा का अंत हुआ। हमने अपने घर की ओर रुख किया। यह यात्रा न केवल हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता को देखने का अवसर थी, बल्कि एक ऐसा अनुभव भी थी, जिसने हमें इस क्षेत्र के पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक पहलुओं से गहराई से परिचित कराया। हिमालय की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित है। और यह संतुलन ही हमें एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

सरकार स्वयं अतिक्रमण में लिप्त; राजकीय भूमि का संरक्षण कैसे होगा

सुचित्रा आर्य

आबादी क्षेत्र विस्तार आज के समय की प्राथमिक आवश्यकता है लेकिन सरकारें इतने संवेदनशील मुद्दे पर उदासीन है। वहीं राजनैतिक दलों को जमीन आवंटन को लेकर सरकारों में जबरदस्त स्फूर्ति देखने को मिलेगी। आज़ादी के बाद जनसंख्या 4 गुना बढ़ी है लेकिन अधिकांश ग्राम पंचायतों का आबादी क्षेत्र यथावत पड़ा है अपवाद स्वरूप आंशिक क्षेत्र को छोड़कर आबादी विस्तार नगण्य ही है। आवासीय भूमि की अनुपलब्धता अतिक्रमण को बढ़ावा देती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन परिवारों के पास राजकीय भूमि के अतिक्रमण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प ही नहीं है। वे स्थाई आवासीय पट्टे नहीं होने के चलते सरकार की योजनाओं से भी वंचित रहते हैं। उन्हें दोहरी मार पड़ रही है; अभावग्रस्त जीवन में अभाव ही अभाव।

अतिक्रमण को लेकर जो विगत कार्यवाही हुई है वो अव्यवहारिक, अस्पष्ट थी! उनमें बड़ा लक्ष्य एवं दृष्टीकोण नजर नहीं आएगा। अधिकांश कार्यवाहियों में कोर्ट आदेशों की पालना कर प्रशासनिक राहत पाने तक ही सीमित थी। सरकार का स्वभाविक दायित्व भी बनता है कि वह राजकीय भूमि को संरक्षण प्रदान करे लेकिन सरकार स्वयं ही अतिक्रमण करें तो वो किस मुँह से राजकीय भूमि के संरक्षण का दावा कर सकती है?

आज की तारीख़ में यदि कब्जे शुदा भूमि का भौतिक सत्यापन होगा तो तक़रीबन 20 प्रतिशत भूमि ऐसी निकलेगी जहाँ सरकार के स्वयं का अतिक्रमण है। अधिकांश ग्राम पंचायतों के राजकीय संस्थान जैसे अस्पताल, विद्यालय, सहकारी समिति कार्यालय, नंदीशाला इत्यादि। जैसे संस्थान गोचर, जोड़ पायतन पर अतिक्रमण शुदा मिलेंगे। बिना भौतिक सत्यापन के जनता के टैक्स के पैसे से राजकीय भवनों को विधि विरुद्ध अनाधिकृत जमीन पर खड़ा कर दिया जिनका भविष्य अंधकार मय है! विडंबना देखिए सरकार के पास लैंड रिकॉर्ड, भरपूर मानवीय संसाधन, मशीनरी है इसके बावजूद इतने बड़े पैमाने पर अनाधिकृत भवन खड़े कर दिए। क्या सरकारों का ये कृत्य गैर कानूनी नहीं है? जब सरकारे ही ग़ैर कानूनी कार्य को अंजाम दे रही है तो कानून की पालना का आम आदमी पर विपरीत प्रभाव ही पड़ेगा। विगत वर्षों का अध्ययन करेंगे तो पायेंगे अतिक्रमण की अधिकांश कार्यवाही रास्ते और मार्ग अवरुद्ध सबंधी ही की गई है जो कि आमजन के आवागमन को सुचारू और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए अति आवश्यक भी है। आवासीय अतिक्रमण के मामले प्रत्येक ग्राम पंचायत में मिलेंगे जहां कुछ जगह पंचायत की भूमि पर अतिक्रमण है, कुछ जगह गोचर भूमि है, कुछ जगह वन भूमि हैं (जिनमे सबसे सर्वाधिक पेचीदगिया है) मामलों के तह तक जाएँगे तो पाएंगे कि यही वन भूमि 1998-99 से पूर्व ग्राम पंचायत की या गोचर/ओरण भूमि थी लेकिन तत्कालीन सरकार ने प्रारम्भिक तौर पर ये मानते हुवे कि ग्राम पंचायत की जमीन को अस्थाई रूप से वन विभाग के अधीन कर दिया था कि जोड़पायतन, गोचर, सिवायचक के डवलपमेंट पर ग्राम पंचायतें ध्यान नहीं दे रही है जिसके चलते एक बड़ी भूमि बंजर और विरान पड़ी है। हालांकि ये कार्य बिना भौतिक सत्यापन हुआ जिसके चलते अधिकांश ग्राम पंचायतों का कुछ हिस्सा जिस पर लोगों की पहले से बसावट थी वो हिस्सा भी वन विभाग के अधीन हो गया जिसे प्रशासनिक लापरवाही कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिसका खामियाज़ा आज लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

इसके अलावा बसावट के अतिरिक्त वृक्षारोपण और डवलपमेंट की जिस मंशा से वन विभाग के अधीन किया गया था वो ज़मीन आज 25-30 वर्ष गुजरने के बाद भी बंजर और विरान पड़ी है। सरकार को ऐसी ज़मीन को चिन्हित करना चाहिए जहाँ आबादी पहले बसी बाद में वन भूमि में रूपांतरित किया गया था क्योंकी अधिकांश घर टूटने के मसले भी इसी से सबंधित निकलेंगे। इन मसलों के समाधान के लिए वैकल्पिक रास्ते तलाशने होंगे जैसे वैकल्पिक राजकीय भूमि को रूपांतरित करके कुछ निश्चित मानक तय करके आबादी भूमि का विस्तार करते हुवे यथा सम्भव लोगों के घरों को टूटने से बचाया जा सकता है। व्यवसायिक अतिक्रमण भी बड़ी चुनौती है राजनैतिक संरक्षण की पनाह में बेतहाशा बढ़ा है; जो कि सरकारी संपति का दुरुपयोग है। सरकार स्वयं अतिक्रमण में लिप्त है तो ऐसे में राजकीय भूमि का संरक्षण कैसे होगा?

सरकार को राजकीय भूमि के संरक्षण के लिए प्रदेशव्यापी भौतिक सत्यापन करना चाहिए जिसमें ये चिन्हित करे कि अतिक्रमण किस श्रेणी का है। अतिक्रमण रिहायशी है, व्यवसायिक है या सरकारी है या फिर रास्ते अवरुद्ध अतिक्रमण है। इसे अलग अलग चिन्हित करने से राजकीय भूमि को संरक्षण प्रदान करने में मदद मिल सकेगी। आबादी भूमि विस्तार नीति की भी आवश्यकता है जिसमें निश्चित मानक स्थापित करके जनसंख्या के अनुपात में आबादी क्षेत्र का विस्तार हो जिसमें आमजन की आर्थिक स्थिति के अनुपात में भी आवासीय सुरक्षा एवं सुनिश्चता परिलक्षित हो।

–सुचित्रा आर्य,
(पूर्व विधायक)

मालपुरा में बेसकीमती जमीनों को पालिका सफाई ठेकेदार ने डम्पिंग यार्ड बनाया

सफाई ठेकेदार द्वारा कचरे की आड़ में भूमाफियाओं को पनपाने का प्रयास किया जा रहा है

मालपुरा, (निसं)। मालपुरा शहर से रोजाना बड़ी तादात में एकत्रित किये जा रहे सूखे व गीले कचरे को एकत्रित कर सफाई ठेकेदार द्वारा पालिका के अधिकृत डम्पिंग यार्ड में डालने के बजाय शहर की प्रमुख सड़कों के किनारे रिक्त पड़ी करोड़ों रूपयों की बेसकीमती जमीनों पर कचरे के ढेर लगाने से शहर का सौन्दर्यकरण तो बदरंग हो ही रहा है साथ ही कचरे की आड़ में भूमाफियाओं को पनपाने का प्रयास किया जा रहा है।

शहर के 35 वार्डों से प्रतिदिन दर्जनों ऑटोकीपर व ट्रैक्टरों के माध्यम से कचरा संग्रह कर टोडारोड के पास कल्याणपुरा रोड पर पालिका की तकरीबन 20 बीघा जमीन पर आरक्षित डम्पिंग यार्ड में कचरा डालने का प्रावधान है, लेकिन सफाई ठेकेदार निश्चित स्थान पर कचरे को डालने के बजाय भूमाफियाओं से मिलकर मुख्य सड़क किनारे कचरे के ढेर लगा गड्ढों में तब्दील जमीन का समतलीकरण करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सूत्रों की माने तो ऑटोकीपर व ट्रैक्टरों में डीजल की खपत उतनी ही दर्शाई जा रही है जितनी कल्याणपुरा रोड पर डम्पिंग यार्ड तक के वाहनों के फेरों में लगता है। सफाई ठेकेदार व वाहन चालक एक तीर से दो शिकार कर रहा है। राजकोष से प्रतिमाह वाहनों में डीजल के नाम पर लाखों रूपयों का खर्च दर्शाया जा रहा है।

मालपुरा शहर के अजमेर रोड पर मुख्य सड़क किनारे करोड़ों रूपये की बेसकिमती जमीन पर कचरा डाला जा रहा है।

- **पालिका की तकरीबन 20 बीघा जमीन पर आरक्षित डम्पिंग यार्ड में कचरा डालने का प्रावधान है**
- **कचरे के ढेर से उठती दुर्गन्ध से राहगीरों का निकलना भी मुश्किल हो रहा है**

अजमेर रोड पर मुख्य सड़क किनारे बड़े भाग में रिक्त पड़ी करोड़ों की जमीन पर डाले जा रहे कचरे के ढेर अब सड़क पर फैल गये है, जिनसे उठती दुर्गन्ध से राहगीरों का निकलना भी मुश्किल हो रहा है। कई भूमाफिया इस जमीन पर अपनी गतिविधियां शुरू कर रहे हैं। कमोबेस यही हाल घाटी रोड, केकडी रोड, गुर्जर छात्रावास के पास, सरकारी अस्पताल के पिछवाड़े का है, जहां भी सरकारी जमीन पर अनाधिकृत रूप से कचरा डालकर शहर का सौन्दर्य बिगाड़ा जा रहा है। इन कचरे के ढेरों की आड़ में भूमाफिया अपने नापाक मनसुबों को अंजाम दे रहे हैं। पालिका में पिछले आठ महीनों से स्थाई ईओ पदस्थापित नहीं होने तथा अन्य पदों पर भी जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति नहीं होने के चलते शहर की व्यवस्थाएं चरमरा रही है। वहीं शहर में सरकारी जमीनों पर अंधाधुंध कब्जे व निर्माण की भी गतिविधियां चल रही है।

कार्यशाला में ट्रांसजेंडर को नए कानूनों की जानकारी दी

अजमेर, (कासं)। ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर शनिवार को पुलिस लाइन सभागार में कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में अजमेर रेंज के पुलिस अधिकारी, थाना अधिकारी और ट्रांसजेंडर नोडल ऑफिसर सहित अजमेर के ट्रांसजेंडरों ने भाग लिया।

एसपी देवेंद्र कुमार विश्नोई ने बताया कि पुलिस में आयोजित ट्रांसजेंडर कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ट्रांसजेंडर समुदाय को समान अधिकार प्रदान करना और भेदभाव को समाप्त करने के लिए नए नियम और कानूनों की जानकारी प्रदान करना रहा। एसपी ने बताया कि कार्यशाला में अधिकारियों को ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाने और उन्हें मौजूदा कानूनी प्रावधानों से अवगत कराने पर बल दिया गया। एसपी विश्नोई ने कहा कि इस पहल से समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के प्रयास को और मजबूती मिलेगी। कार्यशाला के दौरान अधिकारियों ने सरकार के स्तर पर किए जा रहे प्रयास, इनके लिए सरकार की योजनाओं सहित विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। ट्रांसजेंडर बच्चों की पढ़ाई पर चर्चा की गई। नोडल अधिकारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दुर्ग सिंह राजपुरोहित ने बताया कि सरकार की ओर से उन्हें ओबीसी का दर्जा दिया है। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूली शिक्षा प्रदान करें, ताकि बड़े होकर वह भी समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें।

- **ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर कार्यशाला का आयोजन**

ट्रांसजेंडर से किया संवाद :-

कार्यशाला के दौरान पुलिस अधिकारियों ने ट्रांसजेंडर से संवाद भी किया। उनकी समस्याओं को सुना गया। ट्रांसजेंडर ने बताया कि समाज में कई तरह के लोग हैं, कोई उन्हें गलत नजर से देखता है और भद्दे कमेंट्स करते हैं, लेकिन कई ऐसे भी लोग हैं जो उन्हें सम्मान देते हैं। ट्रांसजेंडर ने कहा कि समाज में परिवारों को समझना होगा कि यदि उनके घर में कोई ट्रांसजेंडर बच्चा है तो उसे समाज से छुपाकर नहीं रखें। उनके पास ऐसे बच्चे 14 से 15 साल की उम्र में आते हैं, ऐसे में उनकी शिक्षा प्रभावित होती है।

आवारा श्वानों के आतंक से लोग परेशान

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत रायपुर-पाटन में आवारा कुत्तों के आतंक से परेशान ग्रामीण शनिवार को मुख्य बाजार बंद कर सड़क पर धरने पर बैठ गए। धरने पर बैठे ग्रामीण प्रशासन से आवारा कुत्तों से निजात दिलाने की मांग करने लगे। ग्रामीणों का कहना है गांव में आवारा कुत्तों का बहुत ज्यादा आतंक है। आए दिन आवारा कुत्ते लोगों को काटते रहते हैं। कुछ दिन पूर्व ही करीब 20 लोगों को एक साथ कुत्तों ने काट लिया था, जिसमें दो घायल लोगों की उपचार के दौरान मौत हो चुकी है। कुत्ते के काटने से एक गाय भी भडक गई है, जिससे ग्रामीणों में भी भय बना हुआ है।

राशिफल रविवार 1 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, अश्लेषा नक्षत्र रात्रि 9:49 तक, परिद्य योग सांय 5:50 तक, विष्टि करण रात्रि 4:31 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 9:49 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 9:49 से सूर्योदय तक है। भद्रा सांय 4:31 से आरम्भ होगी। आज मास शिवरात्रि, अघोरा चतुरदशी व्रत है। आज जैन पयुर्षण आरम्भ (पंचमी पक्ष) होंगे और आज प्रथम प्रकाश उत्सव गुरू ग्रन्थ साहिब है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:44 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:01 से 3:35 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:10, सूर्यास्त 6:44

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

कन्या

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कुंभ

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मीन

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 16 संख्याः 298 प्रभात हिण्डौन सिटी, रविवार 1 सितम्बर, 2024 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

कमला हैरिस ने ट्रम्प पर चार पॉइन्ट्स की लीड स्थापित की

रॉयटर द्वारा कराये गये सर्वे के अनुसार, राष्ट्रपति पद पर 45 प्रतिशत लोग कमला हैरिस को देखना चाहते हैं तथा 41 प्रतिशत ट्रम्प को

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **जुलाई के अन्त में कराये गये सर्वे में, कमला हैरिस की ''लीड'' केवल एक प्रतिशत थी।**
- **हैरिस की लीड में इतनी भारी बढ़ोतरी होने का कारण है, कमला हैरिस की लोकप्रियता में महिलाओं और हिस्पैनिक लोगों का समर्थन 13 प्रतिशत बढ़ा है, गत महीने के सर्वे रिज़ल्ट की तुलना में।**
- **इस सर्वे में अमेरिका के 4253 नागरिकों से तथा चुनाव में वोट देने के लिये रजिस्टर्ड 3562 अमेरिकी नागरिकों से यह सवाल पूछकर कि अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में वोट किसकों देंगे, उनकी राय जानी गयी थी।**

नई दिल्ली, 31 अगस्त। उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प पर बढ़त ले ली है। यह जानकारी मिली रॉयटर्स/इप्सॉस पोल के सप्ताहांत में नतीजों से। नतीजों के अनुसार, कमला को 45 प्रतिशत डॉनल्ड ट्रम्प को 41 प्रतिशत वोट मिले हैं। आठ दिन चला यह सर्वे शुक्रवार को ही खत्म हुआ है। इसके अनुसार, जुलाई के अंत में हैरिस को मिली एक पॉइन्ट की बढ़त के मुकाबले यह उल्लेखनीय बढ़त है। हैरिस को जो बढ़त मिल रही है उसके लिए महिलाओं और हिस्पैनिक मतदाताओं का बढ़ता समर्थन है। इन दोनों समूहों में उनकी लोकप्रियता ट्रम्प से 13 प्रतिशत अधिक है। दोनों समूहों में उनकी लोकप्रियता 49 से 36 प्रतिशत है। नवीनतम सर्वे के अनुसार महिलाओं में उनकी लोकप्रियता 9 प्रतिशत तक और हिस्पैनिक मतदाताओं में 6 प्रतिशत तक बढ़ी है, हालांकि श्वेत मतदाताओं और पुरूषों में ट्रम्प अभी भी आगे हैं, पर कॉलेज डिग्री रहित युवाओं में उनकी लोकप्रियता 7 पॉइन्ट घटी है।

जो बाइडन के राष्ट्रपति पद की चुनावी दौड़ से बाहर होने के बाद से हालात में काफी परिवर्तन आया है। बाइडन के पीछे हटने के बाद हैरिस को राष्ट्रीय स्तर पर और प्रमुख राज्यों के चुनावों में काफी बढ़त मिली है। विस्कॉन्सिन, पैनसिल्वेनिया, जॉर्जिया, एरिज़ोना, नॉर्थ कैरोलाइना, मिशीगन और नेवाडा जैसे राज्यों में जहाँ कड़ा मुकाबला है वहाँ रजिस्टर्ड वोटर्स में ट्रम्प को हैरिस पर मामूली सी बढ़त प्राप्त है। लेकिन ब्लूमबर्ग न्यूज़/मॉर्निंग कंसल्ट पोल से पता चलता है कि यहां पर तो हैरिस आगे चल रही हैं या ट्रम्प के बराबर हैं।

रिपब्लिकन नीतिकार मैट वॉल्किंग ने माना कि हैरिस से ट्रम्प को कड़ी चुनौती मिल रही है। उन्होंने कहा कि ट्रम्प के लिए महत्वपूर्ण है कि वोटर्स का समर्थन बनाए रखने के लिए व चुनाव प्रचार रणनीति पर फोकस करें।

जब से हैरिस को डैमोक्रैटिक पार्टी ने राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया है तब से वे जॉर्जिया जैसे महत्वपूर्ण राज्यों में सक्रिय चुनाव अभियान चला रही है ताकि उनका जनाधार मजबूत हो जाए।

हैरिस के लिए जनता में उत्साह साफ नज़र आ रहा है। रॉयटर्स/इप्सॉस सर्वे में शामिल 73 प्रतिशत डैमोक्रैटिक वोटर्स ने कहा कि नवम्बर में होने वाली वोटिंग के प्रति उनका उत्साह बढ़ गया है। प्रगतिवादी सोच के मतदाताओं में ट्रम्प की तुलना में हैरिस का असर ज्यादा है। हैरिस के 52 प्रतिशत मतदाताओं ने कहा कि उनका लक्ष्य ट्रम्प का विरोध करने से कहीं ज्यादा हैरिस को मजबूत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

साइबर फ्रॉड केस में पुलिस को अल्टीमेटम

जयपुर, 31 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने साइबर फ्रॉड के ढाई साल पुराने मामले में कार्रवाई नहीं होने और इन केसों में हो रही बढोतरी को गंभीर माना है। अदालत ने मौखिक रूप से राज्य सरकार को कहा कि जब सी.जे.आई. के साथ ही साइबर फ्रॉड हो चुका है तो फिर पुलिस ऐसे मामलों में इतनी लापरवाह कैसे हो सकती है।

- **राजस्थान हाई कोर्ट ने कहा, सी.जे.आई. तक के साथ साइबर फ्रॉड हो चुका है फिर भी पुलिस इतनी लापरवाह क्यों है। कोर्ट ने 60 लाख रूपए के साइबर फ्रॉड मामले में पुलिस को 30 दिन में कार्यवाही करने का अल्टीमेटम दिया।**

अदालत ने पुलिस को कहा है कि यदि 30 दिन में कार्रवाई नहीं हुई तो 30 सितंबर को डी.जी.पी. व्यक्तिगत तौर पर अदालत में हाजिर होकर इस संबंध में स्पष्टीकरण दें। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश 60 लाख रुपए के साइबर फ्रॉड के मामले में राकेश तोतुका की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि मामला वर्ष 2022 से चल रहा है, लेकिन आरोपियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्र.मंत्री मोदी के स्वघोषित हनुमान संकट में हैं बिहार में?

क्या भाजपा, अपने एन.डी.ए. गठबंधन के साथी चिराग पासवान के पर कुतरना चाहती है?

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **भाजपा के एक तथाकथित कार्यकर्ता ने चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज करायी है कि चिराग पासवान ने चुनाव लड़ने से पहले जो शपथ पत्र के माध्यम से जानकारियाँ प्रस्तुत की हैं, झूठ हैं, असत्य हैं।**
- **साथ ही भाजपा विधायक मुकेश रोशन ने दावा किया कि चिराग पासवान की पार्टी के पाँच निर्वाचित सांसदों में से तीन ''जॉइन'' करने को तैयार हैं।**
- **इस घटनाक्रम के बीच चिराग पासवान के मुख्य प्रतिद्वंदी तथा चिराग के चाचा पशुपति नाथ पारस अचानक सक्रिय हुए और दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह से उनके घर पर मिले तथा शाह को फूलों का गुलदस्ता भेंट किया।**
- **क्या ये संकेत है कि भाजपा खुश नहीं कि चिराग पासवान एन.डी.ए. के खिलाफ सबसे अधिक बोलने वाले नेता के रूप उभर रहे हैं। अतः उन्हें जमीन पर उतारना जरूरी है।**

नई दिल्ली, 31 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वघोषित हनुमान संकट में दिखाई दे रहे हैं।

राकेश कुमार सिंह नामक एक व्यक्ति, जो उड़ती खबरों के अनुसार भाजपा कार्यकर्ता हैं, ने एक याचिका लगाई है तथा चुनाव आयोग में भी शिकायत की है। उन्होंने तीन गंभीर आरोप लगाये हैं- पहली, वे (चिराग) एक दुष्कर्म केस में द्वितीय आरोपी हैं, दूसरी, उन्होंने अपने चुनाव-शपथपत्र में अपनी इंजीनियरिंग डिग्री के बारे में झूठ बोला था; तथा तीसरी, उन्होंने बिहार के खगरिया जिले की अपनी सम्पत्ति के स्वामित्व की बात छुपाई थी। बिहार भाजपा के मीडिया प्रवक्ता ने स्पष्टीकरण देते हुये कहा है कि याचिकाकर्ता का भाजपा से कोई सम्बंध नहीं है। लेकिन चिराग की पार्टी और भाजपा के बीच पैदा हो रहे इस संकट का परिदृश्य काफी बड़ा दिखाई दे रहा है।

एन.डी.ए. के सभी घटक दलों में, चिराग केन्द्र सरकार के हाल ही के नीतिगत निर्णयों के सर्वाधिक मुखर विरोधी रहे हैं। इन नीतियों में, वक्फ बिल में प्रस्तावित संशोधन, तथा नौकरशाही में सीधी एवं स्वैच्छिक भर्ती करने की योजना, जो अब वापस ले ली गई है, प्रमुख रुप से शामिल हैं। चिराग विपक्ष द्वारा की जा रही जातिगत जनगणना की माँग के समर्थन में भी आ गये थे। इन सभी मुद्दों पर सरकार द्वारा अपने कदम पीछे हटा लेने के साथ ही, भाजपा में एक सोच यह भी बनी है कि चिराग अपने कद से कुछ ज्यादा ही बाहर निकल रहे हैं तथा उन्हें रोकने की जरुरत है।

हाल ही के दिनों में, बिहार के एन.डी.ए. पार्टनरों में बड़ी तेजी से कुछ हलचल होती दिखाई दी है। चिराग के चाचा तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री पशुपति नाथ पारस गुमनामी से एकाएक ही

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

8 सितम्बर को 3 दिन के अमेरिका दौरे पर जाएंगे राहुल गांधी

विपक्ष का नेता बनने के बाद राहुल की यह पहली अमेरिका यात्रा होगी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **इंडियन ओवरसीज़ कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने कहा कि जब से राहुल विपक्ष के नेता बने हैं, उनसे मिलने के लिए हमारे पास अनगिनत आवेदन आए हैं।**
- **पित्रोदा ने कहा कि तीन दिन के प्रवास में राहुल गांधी शिक्षाविदों, पत्रकारों, उद्योगपतियों, भारतीय मूल के लोगों व छात्रों के साथ मुलाकात करेंगे तथा विभिन्न मसलों पर चर्चा करेंगे।**

नई दिल्ली, 31 अगस्त। विपक्ष के नेता के रूप में अपने पहले विदेश दौरे में राहुल गांधी अमेरिका जा रहे हैं। वे 8 से 10 सितम्बर तक अमेरिका में रहेंगे। इंडियन ओवरसीज़ कांग्रेस ने कहा कि जब से राहुल गांधी विपक्ष के नेता बने हैं तब से उनके पास बहुत सारे आवेदन आ रहे है, जिनमें राहुल गांधी से मिलने का आग्रह किया गया है।

गांधी 8 सितम्बर को डलास, टैक्सस में रहेंगे तथा 9 व 10 सितम्बर को वॉशिंगटन डी.सी. में रहेंगे।

इस दौरान वे शिक्षाविदों, पत्रकारों, थिंक टैंक्स के प्रतिनिधियों टैक्नोक्रेट्स, व्यवसायियों व भारतीय मूल के अन्य लोगों व स्थानीय लोगों से मिलेंगे।

इंडियन ओवरसीज़ कांग्रेस जिसकी उपस्थिति 32 देशों में है, के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने राहुल की यात्रा की औपचारिक घोषणा करते हुए बताया कि जब से राहुल गांधी विपक्ष के नेता बने हैं, मेरे पास भारतीय मूल के लोगों, इंटरनैशनल मीडिया व अन्य नेताओं की तरफ से आवेदनों की भरमार लगी है। वे सभी राहुल से बात करना चाहते हैं। अब राहुल संक्षिप्त दौरे पर अमेरिका आ रहे हैं।

डलास में गांधी युनिवर्सिटी ऑफ टैक्सस के छात्रों, शिक्षाविदों व अन्य लोगों से वार्ता करेंगे।

कुछ टैक्नाफ्रेटस से भी चर्चा होगी और रात्रि भोज पर इलास के नेताओं से मिलेंगे।

वॉशिंगटन में वे थिंक टैक और नैशनल प्रैस क्लब व अन्य लोगों से मिलेंगे।

पित्रोदा ने बताया कि कई लोगों के साथ मुलाकात करेंगे। लोगों को उन राज्यों में भी काफी रूचि है जहाँ कांग्रेस का शासन है। खासकर बैंगलुरु, हैदराबाद और उम्मीद है कि हम महाराष्ट्र भी जीतेंगे क्योंकि लोगों को पुणे, मुम्बई व गुड़गांव में भी दिलचस्पी है।

ये देश के बिज़नैस शहर हैं जहाँ टैक्नॉलजी पर काफी फोकस है।

पित्रोदा ने कहा कि हम राहुल गांधी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यू.डी.एच. सचिव और डी.एल.बी. निदेशक को अवमानना नोटिस

जयपुर, 31 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने डिप्टी टाउन प्लानर के निलंबन से जुडे मामले में करीब एक साल पुराने अदालती आदेश की पालन नहीं करने पर प्रमुख यू.डी.एच. सचिव टी.रविकांत व डी.एल.बी. निदेशक सुरेश ओला को अवमानना नोटिस जारी किए हैं। जस्टिस उमाशंकर व्यास ने यह आदेश राजपाल चौधरी की अवमानना याचिका पर दिया।

- **हाई कोर्ट ने अदालती आदेश की पालना नहीं करने पर अवमानना नोटिस जारी किया और जवाब मांगा है।**

याचिका में अधिवक्ता दिनेश यादव ने बताया कि याचिकाकर्ता डी.एल.बी. में डिप्टी टाउन प्लानर के पद पर कार्यरत था। इस दौरान उन्हें बिना नाम व पते वाली झूठी शिकायत पर 13 फरवरी 2023 को चार्जशीट देते हुए निलंबित कर दिया। चार्जशीट भी उस अफसर ने दी जिसे देने का अधिकार नहीं था। इसे हाईकोर्ट में चुनौती देने पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चुनाव आयोग ने हरियाणा चुनाव की तिथि एक अक्टूबर से बदलकर 5 अक्टूबर की

कांग्रेस और आप का कहना है, यह संकेत है कि हरियाणा में भाजपा हतोत्साहित है और अभी से अपनी गलती स्वीकार कर रही है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **चुनाव आयोग ने कहा है कि चुनाव की तारीख आगे बढ़ाने का कारण है कि, ऑल इंडिया विश्नोई महासभा का ज्ञापन मिला था कि सदियों पुराने त्योहार आसोज अमावस्या पर हरियाणा के विश्नोई राजस्थान जाते हैं, ऐसे में उनका वोट डालना संभव नहीं हो पाएगा।**
- **चुनाव आयोग ने एक और कारण यह बताया कि, सप्ताहांत के साथ कई छुट्टियाँ होने के कारण लोग प्रायः घूमने निकल जाते हैं।**
- **चुनाव आयोग ने कहा, इन कारणों से मतदान प्रतिशत में भारी कमी आ जाती इसलिए हरियाणा के चुनाव आगे सरकाए गए हैं।**

नई दिल्ली, 31 अगस्त। भाजपा की इच्छा की सुस्पष्ट अनुपालना में, भारत के चुनाव आयोग ने आज हरियाणा विधानसभा चुनाव की मतदान-तिथि 1 अक्टूबर से खिसका कर 5 अक्टूबर कर दी।

जम्मू-कश्मीर के तृतीय चरण की मतदान तिथि में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है, वह 1 अक्टूबर ही बनी हुई है। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर दोनों ही राज्यों के चुनाव परिणाम 8 अक्टूबर को घोषित होंगे।

चुनाव आयोग ने एक अधिसूचना में कहा, ''चुनाव तिथि निर्धारण के बाद, राष्ट्रीय राजनैतिक दलों, प्रांतीय राजनैतिक दलों, तथा अखिल भारतीय विश्नोई महासभा के आग्रह-पत्र प्राप्त हुये थे, जिनमें कहा गया था कि सदियों पुराने असोज अमावस्या त्योहार पर आयोजित समारोह में भाग लेने के लिये विश्नोई समुदाय के लोग बहुत बड़ी संख्या में हरियाणा से राजस्थान जायेंगे।''

ई.सी. की अधिसूचना में कहा गया है, ''पूर्व निर्धारित तिथि पर मतदान होने से बड़ी संख्या में लोग अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं कर पाते तथा हरियाणा विधानसभा चुनावों में मतदाताओं की भागीदारी कम हो जाती।''

24 अगस्त को हरियाणा भाजपा की 'राज्य चुनाव प्रबन्धन समिति' के सदस्य वरिन्दर गर्ग ने कहा था, ''हमने यह तर्क दिया है कि विधानसभा चुनाव की तिथि 1 अक्टूबर (मंगलवार) के पहले सप्ताहान्त अवकाश तथा बाद में भी छुट्टियाँ हैं, जिससे मतदान - प्रतिशतता प्रभावित हो सकती है क्योंकि लोग लम्बे सप्ताहान्त अवकाशों पर प्रायः छुट्टियाँ ले लेते हैं।''

विपक्षी कांग्रेस तथा आम आदमी पार्टी ने इस कार्यवाही की आलोचना की है। पूर्व मुख्यमंत्री तथा कांग्रेस नेता भूपिन्दर सिंह हूडा ने भाजपा पर प्रहार करते हुये कहा है कि पार्टी का रुख बताता है कि उसने पराजय पहले ही स्वीकार कर ली है। मीडिया ने इस वरिष्ठ नेता को यह कहते हुये उद्धृत किया है, ''मतदान ई.सी. द्वारा निर्धारित तिथि के अनुसार ही होने चाहिये।.....हरियाणा की जनता भाजपा सरकार को एक दिन भी सत्ता में देखना नहीं चाहती।''

आप की हरियाणा इकाई ने कहा कि चुनाव होने से पहले ही, सत्तारुढ़ भाजपा ने बहाने तलाश करना शुरु कर दिया था क्योंकि उसने चुनाव में आसन्न पराजय भाँप ली है।

जहाँ भाजपा हरियाणा में लगातार तीसरे कार्यकाल पर नजरें जमाये हुये हैं, वहीं कांग्रेस सत्तारुढ़ दल को सत्ता सेहटा देने की आशा सँजोये हुये है।

चेन्नई के हॉस्टल में रेड, 32 छात्र हिरासत में

चेन्नई, 31 अगस्त। तमिलनाडु में पुलिस ने शनिवार को उन हॉस्टल्स में छापेमारी की, जहां चेन्नई के पास पोथेरी में प्राइवेट कॉलेज के छात्र रहते हैं। इस दौरान एक महिला समेत 32 कॉलेज स्टूडेंट्स को हिरासत में लिया गया। इन्हें एक निजी मैरिज हॉल में रखा गया है और अलग-अलग से पूछताछ की जा रही है। तांबरम नगर पुलिस स्टेशन के कांस्टेबलों ने आज यह रेड मारी। छापेमारी के दौरान भारी मात्रा में गांजा बरामद हुआ। साथ ही भांग चॉकलेट, भांग का तेल और भांग से संबंधित दूसरी चीजें जब्त की गईं। पुलिस की ओर से

- **पुलिस ने हॉस्टल में अचानक रेड डालकर छात्रों के कमरों से भारी मात्रा में गांजा, भांग का तेल व नशीली ड्रग्स इत्यादि बरामद की हैं।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अतिरिक्त महाधिवक्ता की नियुक्ति में कानूनी मायाजाल में फंसी सरकार'

अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद पर हुई इस नियुक्ति को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ता ने कहा कि राज्य सरकार ने मनमाने तरीके से और जल्दबाजी में यह नियुक्ति की

-यादवेन्द्र शर्मा-

- **याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया कि ''राज्य सरकार ने वर्ष 2018 की वाद नीति में संशोधन किया और एक नया ''क्लॉज़ 14.8'' जोड़ा और स्वयं को बेलगाम शक्तियां दीं ताकि वो किसी भी अधिवक्ता को अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद पर नियुक्ति दे सके।**
- **परंतु उसने इसी वाद नीति के 'क्लॉज़ 14.4' में संशोधन नहीं किया, जिसके अनुसार अतिरिक्त महाधिवक्ता की नियुक्ति के लिये अधिवक्ता के पास कम से कम 10 वर्ष का अनुभव होना ही चाहिये।**
- **याचिकाकर्ता का कहना है कि अतिरिक्त महाधिवक्ता को नियुक्त करने से पूर्व राज्य के महाधिवक्ता से ही सलाह नहीं ली गई थी, जो कि वाद नीति के 'क्लॉज़ 14.2' के अनुसार अनिवार्य है।**

जयपुर, 31 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट में 2019 में नामांकित अधिवक्ता, पद्मेश मिश्रा, को राज्य सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के समक्ष पैरवी के लिये अतिरिक्त महाधिवक्ता (ए.ए.जी.) घोषित किये जाने के आदेश के खिलाफ जनहित याचिका दायर की गई। याचिकाकर्ता-अधिवक्ता सुनील समदड़िया ने याचिका में मुख्य तौर पर इस मुद्दे पर जोर दिया है कि राज्य सरकार ने वर्ष 2018 की वाद नीति में संशोधन किया और एक नया 'क्लॉज़ 14.8' को जोड़कर स्वयं को बेलगाम शक्तियां देने का प्रावधान जोड़ा जिसके तहत वे किसी भी अधिवक्ता, के अनुभव को आंकने के बाद, उसे अतिरिक्त महाधिवक्ता, महाधिवक्ता या किसी भी सरकारी वकील के पद पर नियुक्ति कर सकती है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2018 की वाद नीति में कोई और संशोधन नहीं किया जबकि इसी वाद नीति में 'क्लॉज़ 14.4' के अनुसार अतिरिक्त महाधिवक्ता की नियुक्ति के लिये अधिवक्ता के पास कम से कम 10 वर्ष का अनुभव होना चाहिये।

याचिकाकर्ता समदड़िया ने इस मामले में आवेदन दायर कर यह भी गुहार की थी कि पद्मेश मिश्रा की नियुक्ति के आदेश पर तुरंत प्रभाव से अंतरिम रोक भी लगाई जाये। इस मामले की पहली सुनवाई करते हुए न्यायाधीश अनिल उपमन ने राज्य सरकार तथा अधिवक्ता पद्मेश मिश्रा को नोटिस जारी किये और कहा कि याचिकाकर्ता अगली सुनवाई पर नियुक्ति के आदेश पर अंतरिम रोक लगाने के अपने आवेदन पर जिरह जारी रख सकते हैं।

इस मामले में दायर याचिका के अनुसार राज्य सरकार ने 23 अगस्त 2024 को वाद नीति में एक संशोधन किया जिसके तहत उसने स्वयं को बेलगाम शक्तियां देने का प्रावधान जोड़ा जिससे वह किसी भी अधिवक्ता को मनमाने तरीके से अतिरिक्त महाधिवक्ता घोषित कर सकती है। याचिका में यह भी बताया गया है कि 23 अगस्त को ही राज्य सरकार ने पद्मेश मिश्रा को अतिरिक्त महाधिवक्ता घोषित करने का आदेश भी पारित किया। याचिकाकर्ता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी ने युवाओं में आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताई

नयी दिल्ली 31 अगस्त (वार्ता) कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने युवाओं में बढ़ रही आत्महत्या की घटनाओं पर गहरी चिंता जाहिर करते हुए सरकार से युवाओं के खुशहाल भविष्य के लिए विकासोन्मुखी योजना बनाने का आग्रह किया है।

- **राहुल गांधी ने कहा कि बीते एक दशक में भारत में आत्महत्या के मामले दोगुने हो गये हैं। बीते दस सालों में 13 हजार 44 युवाओं ने आत्महत्या की है तथा उससे पहले के दस वर्षों में यह आंकड़ा 6,654 ही था।**

गांधी ने अपने व्हाट्सएप चैनल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

CMYK CMYK

मंडफिया में नकली मावे से बनी हुई मिठाइयां बेचने का धंधा जोरों पर

नकली मावे से बनी मिठाइयों को सांवलियाजी सेठ के मंदिर में ले जाने पर प्रतिबंध लगाने की मांग

मंडफिया, (निसं)। मंडफिया कस्बे में प्रसाद के नाम से बैचे जाने वाला रेडीमेड नकली मावे का धंधा खूब फल-फूल रहा है। जानकारी के अनुसार भगवान श्री सांवलिया जी सेठ मंडफिया की नगरी में केमिकल युक्त नकली मावे से बनी मिठाईयां बेचने का गोरखधंधा जोरों शोरों से चल रहा है।

मंडफिया कस्बे के जागरूक एवं आईटीआई कार्यकर्ता कैलाश चंद्र डाड ने बताया कि इस मामले को लेकर रसद विभाग के टोल फ्री नंबर 181 पर शिकायत 12 जुलाई 2024 को दर्ज करवाई गई थी। शिकायत दर्ज होने के बाद फूड इंस्पेक्टर घनश्याम शर्मा व टीम मावे का सैंपल लेने मंडफिया पहुंची। फूड इंस्पेक्टर शर्मा व टीम ने मंदिर के आसपास की दुकानों से मावों का सैंपल लेकर चित्तौड़गढ़ लैब में ले गए। जागरूक कार्यकर्ता डाड ने बताया कि सैंपल के लिए ले जाए गए मावे की डेढ़ माह बीत जाने के बाद भी ना जांच हुई ना ही कार्रवाई हुई, जिससे इन दुकानदारों के हौंसले बुलंद हैं। रसद विभाग की टीम ने मावे की जांच के नाम पर खानापूर्ति कर कार्य से अतिश्री कर ली है।

जागरूक कार्यकर्ता डाड एवं ग्रामीण सांवलिया जी मंदिर बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष कालूराम गुर्जर, मंडफिया पूर्व वार्ड पंच लक्ष्मी लाल खटीक, रामलाल गुर्जर ने बताया कि यह नकली मावा सांवलिया जी मंदिर मंडल की दुकानों में एवं कस्बे की अन्य मिठाईयां की दुकानों में खूब बिक रहा है। यह नकली मावा खाने से मंडफियावासियों के एवं बाहर से आने वाले भक्तों के शरीर में जहर घोल रहा है। यह नकली मावा शरीर में कई गंभीर बीमारियों को जन्म दे रहा है। दुकानदार नकली मावा व उससे बनी मिठाईयां बैचकर मोटी गाड़ी कमाई कर अपनी जेबें भरने में लगे हुए हैं। इन दुकानदारों को लोगों के स्वास्थ्य की थोड़ी सी भी फ़िक्र नहीं है। यह दुकानदार बेफिक्र होकर नकली मावा ग्रामीणों को एवं भक्तों को बड़े मजे के साथ बेच रहे हैं।

कार्यकर्ता डाड ने बताया कि यह नकली मावा अन्य जिलों व शहरों से सील पैक कट्टों में मंडफिया कस्बे में स्थित सांवलिया जी मंदिर की दुकानों में एवं अन्य मिठाईयों की दुकानों में बड़ी मात्रा में पहुंच रहा है। इन सील पैक कट्टों में रंग बिरंगे जैसे सफेद, केसरिया, पीला, हरा व चॉकलेटी आदि रंगों का नकली मावा होता है। उसके बाद दुकानदार अपने सांचे में उस मावे को डालकर पेड़े बनाकर उसके ऊपर काजू बादाम की कतरन लगा कर कागज के मनमोहक पेकिंग डिब्बों में भरकर बेचा जा रहा है। इसमें खास बात यह है कि यह नकली मावा 130 रुपए से 150 रुपए प्रति किलो के हिसाब से दुकानदार खरीदते हैं फिर यही दुकानदार इस मावे को 500 से 600 रुपए प्रति किलो के हिसाब से भक्तों को बैच रहे हैं। जागरूक कार्यकर्ता कैलाश चन्द्र डाड ने बताया कि इस नकली मावे को यात्रीगण अच्छा समझ कर भगवान सांवलिया सेठ के मंदिर में लेकर पहुंच रहे हैं और यही मावा मंदिर के गर्भग्रह में सांवलिया जी सेठ की मूर्ति के समक्ष भोग के रूप में चढ़ रहा है। भगवान के भोग चढ़ जाने के बाद उस मावे को यात्री मंदिर परिसर में अपने परिवार जनों को एवं अन्य भक्तों को प्रसाद के रूप में वितरण करते हुए देखा जा सकता है, लेकिन इन यात्रियों को पता ही नहीं है कि यह जो मावा है वो केमिकल युक्त नकली मावा है।

इधर ग्रामीणों ने मंदिर प्रशासन से इस मामले को शीघ्र संज्ञान में लेकर असली नकली मावे की जांच करवा कर यात्रियों एवं ग्रामीणों के स्वास्थ्य को बचाने की मांग की है। ऐसे नकली मावे को भगवान सांवलिया जी सेठ के मंदिर में ले जाने पर कड़ा प्रतिबंध लगाने की मांग की है। डाड ने यह भी बताया कि नकली मावा सप्लायर मंडफिया कस्बे में क्विंटलों बंद मावा बेच कर दुकानदारों को ऐसी सुविधा दे रखी है कि दुकानदार के मावा अगर नहीं बिकता है व खराब होता है तो सप्लायर उस सड़े गले मावे को ले जाकर पुन: बनाकर मावे में मिलाकर दोबारा दुकानदारों को बेच देता है।

- डेढ़ माह पहले शिकायत पर दुकानों से मिठाइयों के सैम्पल लिये गये थे, लेकिन अब तक नहीं हुई कोई कार्रवाई

मंडफिया में खुले आम दुकानों में नकली मावे से बनी मिठाइयां बेची जा रही है।

सामूहिक दुष्कर्म के मामले में फरार दो ईनामी गिरफ्तार

हरिद्वार उत्तराखण्ड की रहने वाली एक युवती से दुष्कर्म किया और फरार हो गए थे

मनियां थाना पुलिस ने दुष्कर्म के आरोपियों को गिरफ्तार किया।

धौलपुर, (निसं)। सामूहिक दुष्कर्म के प्रकरण में फरार चल रहे 45 हजार रुपये के दो ईनामी बदमाशों को धौलपुर जिले की मनियां थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जिन्होंने 24 अगस्त को हरिद्वार उत्तराखण्ड की रहने वाली एक युवती को नौकरी दिलाने का झांसा देकर फोन कर मनियां बुलाया। जिसके बाद तीन लोगों ने सामूहिक रूप से दुष्कर्म किया और फरार हो गए। मामले में टीम गठित कर फरार आरोपियों की तलाश की गई।

मामले को लेकर मनियां सीओ राजेश कुमार ने बताया कि प्रकरण में घटना के समय से फरार आरोपियों की तलाश के लिए मनियां थाना क्षेत्र के गांव व उनके छिपने वाले सम्भावित स्थानों पर तलाश की गई। इसके बाद मुखबिर से सूचना मिली कि प्रकरण में फरार सामूहिक दुष्कर्म के आरोपी जलालपुर मोड़ पर खड़े हैं, जो कहीं जाने की फिराक में है। सूचना पर थानाधिकारी मनियां नरेश शर्मा मय टीम के जलालपुर मोड़ पहुंचे, जहां पर दोनों आरोपी खड़े हुए थे, जिन्हें घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया, जिसमें अहम भूमिका कांस्टेबल नरेन्द्र, विक्रम, प्रेमचन्द, राजेश ने निभाई।

मनियां सीओ राजेश कुमार ने बताया कि सामूहिक दुष्कर्म के मामले में फरार चल रहे 45 हजार रुपये के ईनामी बदमाश रामौतार उर्फ औतार उर्फ अवतार पुत्र भवूति गुर्जर और पतिया उर्फ पतिराम पुत्र होतमसिंह गुर्जर को गिरफ्तार किया है। जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक धौलपुर सुमित मेहरड़ा की ओर से औतार गुर्जर पर 25 हजार रुपये और पतिराम पर 20 हजार रुपये का ईनाम घोषित किया गया था। दोनों से पूछताछ के बाद कोर्ट में पेश किया गया है।

होमगार्ड का शव मिला, परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया

तारानगर, (निसं)। तारानगर के एक खेत में बने झौपड़े में एक होमगार्ड का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। परिजनों ने हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस थाने में कई लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करवाया है।

थानाधिकारी गौरव खिड़िया ने बताया कि तारानगर के वार्ड 21 निवासी सुनिल कुमार पुत्र सीताराम शर्मा ने मामला दर्ज करवाया कि मेरा खेत मिखाला की रोही में स्थित है व हमारे खेत से दक्षिणी की ओर मेरे ताऊ कांता प्रसाद का खेत है। उसी हिस्से में कांता प्रसाद के पुत्र भगवानाराम के हिस्से की कृषि भूमि है। भगवानाराम होमगार्ड में नौकरी करता है, इसलिये अपने हिस्से की कृषि भूमि को गोविन्दराम पुत्र ऋषि कुमार को हिस्से पर काश्त पर दे रखी थी। 30 अगस्त दोपहर को भगवानाराम अपने खेत को संभालने गया था। उस समय उसके खेत में गोविंदराम पुत्र ऋषि कुमार, उसकी तथाकथित पत्नी नामालूम, राकेश पुत्र सीताराम माली, दिनेश सुखा पुत्रगण कमलाप्रसाद माली, नन्दलाल पुत्र बुधाराम माली, भोलूराम माली व अन्य 6-7 लोग और थे जो भगवानाराम के खेत में गोविन्द के पास बैठ हुये थे। मैं मेरे खेत में काम कर रहा था तो दोपहर करीब तीन बजे के आसपास भगवानाराम के खेत में आवाजें हुई में उधर भागकर गया और देखा कि भगवानाराम को लाठियों से व तार के हेंटर से मारपीट कर रहे थे। तो मैंने कहा तो मेरे को भी मारने के लिये दौड़े। मैं जान बचाकर भाग गया।

उसके बाद कुछ समय पश्चात भगवानाराम की तलाश की तो मुझे नहीं मिला, जिस पर मैनें मेरे घरवालों को सूचना की जिस पर मेरा भाई हरीश, पिता सीताराम, कांता प्रसाद, सुरेन्द्र भगवानाराम की तलाश करने आये। हम रातभर उसकी तलाश करते रहे। तलाश करने पर मेरे भाई भगवानाराम की लाश पालाराम माली के खेत में बन झौपड़े में मिली।

उपरोक्त सभी लोगों ने मेरे भाई की हत्या की है। मेरे भाई के सारे शरीर पर भयंकर चोटें लगी हुई हैं कई हड्डिया टूटी हुई है। उधर होमगार्ड भावनाराम का शव पड़ा होने की सूचना मिलने पर तारानगर डीएसपी मिनाक्षी, थानाधिकारी गौरव खिड़िया पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे घटना की जानकारी ली। पुलिस ने भगवानाराम के शव को अपने कब्जे में लेकर उसे तारानगर उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया व पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू की। एसएफएल टीम ने भी मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने मृतक भगवानाराम के शव का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

- पुलिस एवं एसएफएल टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए

लूट-डकैती के तीन आरोपियों को सात-सात साल की सजा

किशनगढ़ बास, (निसं)। अलवर-किशनगढ़ बास हाईवे पर बंबोरा घाटी के पास 10 साल पहले बदमाशों ने गाड़ी पर लाल बत्ती लगाकर अलवर से दिल्ली जा रहे परिवार की गाड़ी को अगवाकर जंगल में ले जाकर गाड़ी में बैठे परिवार के साथ जेवरात व नगदी लूट व डकैती मामले में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश संख्या-2 जगदीश प्रसाद मीणा ने तीन आरोपियों को 7-7 वर्ष का कारावास व पांच-पांच हजार के अर्थदंड से दंडित किए जाने के आदेश दिए हैं।

अपर लोक अभियोजक अजीत राव ने बताया कि 16 फरवरी 2014 को दिल्ली निवासी सपन मोहन गर्ग ने किशनगढ़ थाने में मुकदमा दर्ज कराया कि वह 14 फरवरी रात को अपनी पत्नी व बच्चों के साथ कार में सवार होकर अलवर से दिल्ली जा रहे थे। रात्रि करीब 11:45 पर किशनगढ़ के बंबोरा घाटा के पास अचानक एक मारुति स्विफ्ट सफेद रंग की गाड़ी लाल बत्ती लगी हुई ने ओवरटेक कर हमारी कार को रोक दिया और लाल बत्ती वाली कार से 6 बदमाश उतरे एवं हमारे ड्राइवर को जबरन खींचकर अपनी गाड़ी में बैठा लिया। तीन बदमाश हमारी गाड़ी में घुस आए जिसमें से एक ने गाड़ी चलाई एवं पीछे बैठे बदमाश ने कट्टा मेरी पत्नी के माथे पर लगा दिया। मेरी पत्नी के पहने हुए जेवर, 20 हजार नगदी, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड मोबाइल लैपटॉप छीन लिया एवं दोगडा के जंगल में छोड़कर चले गए।

पुलिस ने मामले की जांच कर सात लोगों के विरुद्ध अदालत चालान पेश किया। अदालत में सुनवाई के बाद अपर जिला सत्र न्यायाधीश जगदीश प्रसाद मीणा ने आरोपी इब्रा उर्फ इब्रान पुत्र ममरेज निवासी सोमका पहाड़ी भरतपुर, आदिल पुत्र मजीद निवासी बादली पुनहाना हरियाणा, हंडू उर्फ देवो उर्फ देवीलाल पुत्र समय सिंह निवासी भटटकी की जुरहरा भरतपुर के विरुद्ध दोष सिद्ध पाए जाने पर सात-सात वर्ष की सजा व अर्थदंड से दंडित किया है।

पैदल जातरू मां-बेटी को बोलेरो ने कुचला, मां की मौत

जोधपुर, (कास)। शहर के निकटवर्ती मोगड़ा गऊशाला के पास पैदल जा रहे जातरू मां-बेटी को एक बोलेरो चालक ने अपनी चपेट में लेकर कुचल दिया। इसमें मां की मौत हो गई जबकि बेटी जख्मी हो गई। मामले में विवेक विहार पुलिस ने शनिवार को शव को कार्रवाई कर परिजनों को सौंपा। बेटी का अस्पताल में उपचार जारी है। वहीं दूसरी तरफ रामसागर चौराहा के पास पिकअप के चालक ने युवक को अपनी चपेट में ले लिया, जिससे उसकी मौत हो गई।

विवेक विहार थाने के एएसआई भरतलाल ने बताया कि सिरोही जिले के पिण्डवाड़ा स्थित ठंडीबेरी निवासी मालाराम पुत्र लिंबाराम गरासिया का परिवार बाबा के दर्शनार्थ रामदेवरा की तरफ जा रहा था। यह लोग पैदल थे। मोगड़ा गऊशाला के पास में किसी बोलेरो के चालक ने उसकी पुत्रवधु 21 साल की बिजरी कुमारी पत्नी गोमाराम गरासिया और उसकी 3 साल की बेटी को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में बिजरी की मौत हो गई। वहीं उसकी बेटी घायल हो गई। एएसआई भरतलाल ने बताया कि बोलेरो चालक के खिलाफ केस दर्ज कर अब जांच की जा रही है। शव को आज कार्रवाई कर परिजन के सुपुर्द किया गया है। वहीं दूसरी तरफ एयरपोर्ट पुलिस ने बताया कि डांगियावास निवासी डूंगरराम पुत्र शेराराम जाट ने रिपोर्ट दी कि उसका भाई बासनी बेंदा पुलिया से निकल रहा था। तब किसी पिकअप के चालक ने उसे चपेट में ले लिया।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड, बाडी
पता-बाईपास किला बाडी-328021 फोन नं. 05647-274684 ई मेल-ee_pwdbari@rediffmail.com
क्रमांकः 668 दिनांकः 28.08.2024
अल्पकालीन निविदा सूचना संख्याः 02/2024-2025
(NIB PWD2425A1293 & UBN PWD2425WSOB04668, PWD2425WSOB04671, PWD2425WSOB04674)
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से बाडी जिला धौलपुर में कुल 3 नं. पर भवन / सडक कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों, राज्य सरकार के अन्य विभागों में पंजीकृत ''एए, ''ए''बी''सी'' एवं डी'' श्रेणी संवेदकों एवं केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के ''एए,''ए''बी''सी'' एवं डी'' श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण वेबसाईट "www.eproc.dipronlineorg" व http://www.pwd.rajasthan.gov.in/, www.eproc.rajasthan.gov.in एवं "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है।
(सौरभ शर्मा)
DIPR/C/7972/2024 अधिशाषी अभियन्ता सानिवि खण्ड बाडी

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग वृत्त जालोर
क्रमांकः अअ/वृत्त/जा/2024-25/1011-1027 दिनांकः 27.08.2024
निविदा सूचना संख्या : 01 वर्ष 2024-25
NIB No. PWD2425A1276
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत सडक कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कुल 03 कार्य जिनकी लागत राशि रू. 842.00 लाख है, अतः उक्त कार्यों के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	02 सितम्बर 2024, प्रातः 10.00 बजे से 23 सितम्बर 2024, सायं 6:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http:// eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http:// eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।
NIB No. PWD2425A1276

क्र.सं.	यूबीएन नं.
1	PWD2425WSOB04616
2	PWD2425WSOB04617
3	PWD2425WSOB04618

DIPR/C/7931/2024
(चतुर्भुज खुडीवाल)
अधीक्षण अभियन्ता
सा.नि.वि. वृत्त, जालोर
मोबाईल 9414587359

चाकूबाजी मामले में छात्रों को स्कूल से निकाला

उदयपुर, (निसं)। स्कूल के बाहर छात्र पर चाकू से हमला करने के मामले में स्कूल प्रबंधन ने पांच छात्रों को टीसी सौंपकर स्कूल से निकाल दिया।

प्रकरण के अनुसार शुक्रवार को शहर के युनिवर्सीटी रोड़ पर स्थित निजी स्कूल के बाहर आपसी कहासुनी के दौरान स्कूल छात्रों ने सहपाठी छात्र पर चाकू से प्राणघातक हमला कर एक छात्र को घायल कर दिया था।

इस मामले में जांच अधिकारी पुलिस उप अधीक्षक अब्दुल रहमान ने डिटेनशुदा पांच छात्रों को न्यायालय में पेश किया, जहां से सभी को बाल सम्प्रेशण गृह भेज दिया, जबकि स्कूल प्रबंधन ने कार्यवाही करते हुए मामले में करीब पांच छात्रों को स्कूल से निष्कासित कर दिया।

इस मामले में शनिवार को पीड़ित छात्र के परिजनों एवं अभिभावकों ने कार्यवाही की मांग करते हुए स्कूल में हंगामा किया था।

सीकर: रैवासा पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य वेदांती पंचतत्व में विलीन

राघवाचार्यजी महाराज द्वारा घोषित उत्तराधिकारी जगतगुरू द्वाराचार्य राजेंद्रदास देवाचार्य मलूक पीठाधीश्वर बंसीवट वृंदावनधाम ने मुखाग्नि दी

सीकर, (निसं)। रैवासा पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी राघवाचार्यजी वेदांती महाराज की पार्थिव देह शनिवार को पंचतत्व में विलीन हो गई। महाराज द्वारा घोषित उत्तराधिकारी जगतगुरू द्वाराचार्य राजेंद्रदास देवाचार्य मलूक पीठाधीश्वर बंसीवट वृंदावनधाम ने मुखाग्नि दी।

डॉ. स्वामी राघवाचार्यजी वेदांती महाराज का शुक्रवार को हृदय गति रूकने से निधन हो गया था। श्री जानकीनाथ बड़ा मंदिर से उनकी बैकुंठी निकाली गई जो रैवासा गांव में होती हुए अंतिम स्थल पर पहुंची। यहां पर अश्रुपूर्ण नयनों से सभी ने उनकी पार्थिव देह को श्रद्धासुमन अर्पित किए। अनुयायियों ने रूंवासे मन से महाराज को अंतिम विदाई दी। महाराज की बैंड-बाजे सहित भजनों के साथ निकली बैकुंठी को देखने और अंतिम विदाई देने के लिए पूरा रैवासा गांव सहित भारत के सभी हिस्सों से धर्मगुरू, संत, राजनेता सहित उनके अनुयायी मौजूद रहे। डॉ. स्वामी राघवाचार्यजी वेदांती महाराज की देह को वहां मौजूद सभी लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंतिम क्रिया स्थल पर महाराज को विदाई देने के लिए सभी संप्रदायों के पीठाधीश्वर, महंत सहित हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

महाराज के अग्नि संस्कार में वैष्णव समाज, दादूपंथी संप्रदायों के मठाधीशों सहित यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा, राज्यसभा सदस्य घनश्याम तिवाड़ी, दांतारामगढ़ विधायक विरेंद्र सिंह, हाथोज पीठ के पीठाधीश्वर व हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य, भाजपा हरियाणा के प्रदेश प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया, लोहार्गल पीठाधीश्वर अवधेशाचार्य महाराज, पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, रैवासा सरपंच राजकुमार सैनी, पूर्व विधायक रतनलाल जलधारी, पूर्व मंत्री बंशीधर बाजिया, सीकर के पूर्व एडीएम हरिशंकर भारद्वाज, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. कमल सिखवाल, सभापति जीवण खां, चंद्रमादास महाराज, श्रीकुमार लखोटिया, महेश शर्मा, रामचंद नेहरा सहित काफी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। यूडीएच मंत्री झाबरसिंह खर्रा ने कहा कि अग्रपीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य महाराज के देहलोकगमन पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गहरी संवेदना व्यक्त की है। राज्य सरकार व मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के तौर पर वे महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। राज्यसभा सदस्य घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि स्वामी राघवाचार्य महाराज का देहलोकगमन हमारे लिए बहुत बड़ा सदमा है।

भाजपा के हरियाणा प्रभारी व पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि स्वामी राघवाचार्य महाराज ने शेखावाटी में ही नहीं अपितू राजस्थान व देश में सनातन की धर्म प्रजा को फैलाने का काम किया है। हम महाराज को सुनते भी थे और खिखते भी थे। पूनिया ने कहा कि आज महाराज विधिक रूप से हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी आत्मिक व धार्मिक प्रेरणायें हमारे बीच में हमेशा रहेगी। दांतारामगढ़ विधायक विरेंद्र सिंह ने कहा कि स्वामी जी ने शिक्षा, वेदों के अध्ययन, धर्म के क्षेत्र में हमेशा सहयोग दिया है। ऐसे धर्मगुरू के हमारे बीच से चले जाना अपूरणीय क्षति है। सभापति जीवण खां ने कहा कि स्वामी राघवाचार्य महाराज ने सर्वसमाज को साथ लेकर गौसेवा में अनुकरणीय कार्य किया है। उनका ऐसे चले जाना हम सबके लिए बहुत दुखदायी है। भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. कमल सिखवाल ने कहा कि महाराज ने शिक्षा, संस्कृत व संस्कृति की अलख संपूर्ण समाज में जगाई है। हमारे बीच से चले जाने की पूर्ति करना हम सबके लिए असंभव है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया ने कहा कि स्वामी राघवाचार्य महाराज ने सामाजिक समरसता के साथ वेदों को आगे बढ़ाने के लिए धार्मिक कार्यक्रमों सहित संस्कृत शिक्षा को आगे बढ़ाने का काम किया है। कहा कि महाराज ने रैवासा पीठाधीश्वर के रूप में जो छवि पूरे देश में रैवासा की बनाई वह अपने आप में दुर्लभ है। महाराज जनता जर्नादन से सीधे रूप से जुड़े रहते थे।

हाथोज पीठाधीश्वर व हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज ने स्वामी राघवाचार्य महाराज के देहलोकगमन को संत समाज सहित सभी के लिए बेहद दुखदायी बताया। वैदिक आश्रम पिपराली के स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने कहा कि महाराज ने लंबे समय तक इस क्षेत्र में समाजसेवा के साथ-साथ में वेद, संस्कृति, धर्म का प्रचार प्रसार किया है। इससे उनकी संपूर्ण देश में ख्याति थी। कहा कि महाराज ने हमेशा सेवा के कार्य किए हैं।

- यूडीएच मंत्री झाबरसिंह खर्रा ने मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के तौर पर महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की

स्वामी राघवाचार्यजी महाराज के अंतिम संस्कार में अनेक संत, राजनेता और अनुयायी शामिल हुये।

राजकीय महिला अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, अजमेर
GOVT. WOMEN ENGINEERING COLLEGE, AJMER
(An Autonomous Institute of Govt. of Rajasthan)
Nasirabad Road, Makhupura, Ajmer-305002
website: www.gweca.ac.in Ph. No.: 0145-2695535 email: principal@gweca.ac.in Fax No.:0145-2695102
रा.म.अ.म./प्रोक्टर/2024-25/39 दिनांक 31.08.2024
बी. टेक. प्रथम वर्ष में रिक्त सीटों पर सीधे प्रवेश हेतु (2024-25)
महिला अभियांत्रिकी महाविद्यालय अजमेर में बी. टेक. प्रथम वर्ष में रिक्त रही सीटों पर सीधे प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं।
(REAP CODE : 1052)

Branches available	Last Date & Timing for Applying for Direct Admission	Date & Timing of Counselling	Venue
Computer Science & Engg.,(CSE) Information Technology, (IT) Electronics & Communication Engg.,(ECE) Electrical Engg., (EE) Electrical & Electronics Engg., (EEE) Mechanical Engg.,(ME) Artificial Intelligence & Machine Learning (AIML)	14.09.2024 (upto 11:00 am)	14.09.2024 From 1:00 pm onwards	Govt. Mahila Engineering College Nasirabad Road Makhupura Ajmer

समस्त प्रवेश प्रक्रिया रीप-2024 के दिशा निर्देशानुसार होगी।
प्रवेश इच्छुक छात्राएं महाविद्यालय से फॉर्म प्राप्त कर अथवा महाविद्यालय वेबसाइट www. gweca.ac.in से फॉर्म डॉऊनलोड कर उसे भरकर मय दस्तावेजों की छायाप्रति सहित निर्दिष्ट तिथि तथा समय पर महाविद्यालय में जमा करा सकते हैं। (फॉर्म और दस्तावेजों को स्कैन कर proctor@gweca.ac.in मेल भी निर्धारित समयावधि में प्रेषित कर सकते हैं)। काउंसिलिंग के समय छात्राओं को व्यक्तिगत रूप से मूल दस्तावेजों और शुल्क के साथ उपस्थित होना अनिवार्य है।
महाविद्यालय में एम.सी.ए. तथा बी. टेक. द्वितीय वर्ष (LATERAL ENTRY) में प्रवेश प्रक्रिया संचालित है।
Contact No. : 9829149706, 9928464454, 9828648789,9829081523
प्राचार्य

भारत विकास परिषद्, शाखा हिण्डौन सिटी द्वारा सेमीनार आयोजित

हिण्डौन सिटी। भारत विकास परिषद्, शाखा हिण्डौन सिटी द्वारा संस्कृति सप्ताह प्रकल्प के (प्रथम कार्यक्रम) अन्तर्गत आज स्थानीय बयाना रोड स्थित निर्मल महाविद्यालय के सभागार में आकस्मिक हृदयाघात से जीवन रक्षा हेतु सीपीआर देने की विधि और उपयोगिता एवम् छात्राओं में जागरूकता को ''गुड टच - बेड टच'' व सुरक्षा विषयों पर सेमीनार आयोजित की गई।

- कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मां भारती के चित्रपट पर माल्यार्पण व दीपप्रज्वलन कर ''गुड टच - बेड टच एवम् सीपीआर'' विषय पर दो चरणों मे सेमीनार का आयोजन किया गया

भारत विकास परिषद्, शाखा हिण्डौन सिटी द्वारा निर्मल महाविद्यालय के सभागार में सेमीनार आयोजित की गई।

शाखा अध्यक्ष उपेन्द्र गुप्ता एवम् संस्कृति सप्ताह प्रकल्प प्रभारी वन्दना शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मां भारती के चित्रपट पर माल्यार्पण व दीपप्रज्वलन कर ''गुड टच - बेड टच एवम् सीपीआर'' विषय पर दो चरणों मे सेमीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम प्रभारी डॉ हेमलता गुप्ता ने सभागार में उपस्थित छात्राओं को ''गुड टच - बेड टच'' के बारे में बारीकी से बताया वही आवश्यकता पडने पर अपनी सुरक्षा करने सम्बन्धी गुर सिखाए।

अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। मंच संचालन श्रीमती श्वेता जैन ने किया।

महिला सहप्रमुख पूजा सिंघल ने बताया कि महाविद्यालय के खचाखच भरे सभागार में छात्र छात्राओं को आकस्मिक हृदयाघात जैसी स्थिति बनने पर जीवन रक्षा हेतु सीपीआर देने की विधि एवम् उसकी उपयोगिता पर जिला अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ आशीष शर्मा, प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ सुरेश गर्ग एवम् शाखा अध्यक्ष उपेन्द्र गुप्ता ने सभी को गहनता से जानकारियां दी। निर्मल बी एड कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ बृजेन्द्र सिंह डागुर, हरिओम शर्मा, निर्मल एज्यूकेशन कैम्पस के अतीक अहमद, शैलेश शर्मा, प्रियंका जोशी, मनोज शर्मा, चन्द्रभान सिंह, किल्लू सिंह, दिनेश चौधरी, गजेन्द्र सोलंकी, रवि शर्मा ललित शर्मा आदि ने विचार रखे।

संस्कृति सप्ताह प्रकल्प सहप्रभारी रजनी गोयल ने बताया कि निर्मल महाविद्यालय में ''गुड टच - बेड टच एवम् सीपीआर'' विषय पर आयोजित सेमीनार में परिषद् सदस्य माया गोयल, आरती बिंदल, सुधा अग्रवाल, मंजू गुप्ता, मोना मित्तल, सुहानी गर्ग, गरिमा गुप्ता, रेखा गुप्ता एवम् रक्तदान प्रकल्प प्रभारी मोहित मित्तल आदि शामिल रहे।

प्रकल्प प्रभारी वन्दना शर्मा ने बताया कि शाखा द्वारा प्रतिवर्ष की भांति संस्कृति सप्ताह प्रकल्प के अन्तर्गत इस बार गुड टच - बेड टच एवम् सीपीआर, हिमोग्लोबन जॉच व सफाई जागरुकता चर्चा, नेत्र व दंत जॉच शिविर, कबाड़ से जुगाड प्रतियोगिता, शहर के पौराणिक स्थल प्रहलाद कुण्ड पर टिफिन गोठ, भजन व कीर्तन आयोजन (राधाष्टमी पर), बेटी बचाओ बेटी पढाओं (नाट्यय प्रस्तुति), चित्रकला प्रतियोगिता एवम् सामूहिक वाद विवाद प्रतियोगिता इत्यादि सहित कुल 9 कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

सभी कार्यक्रमों को अधिकाधिक उपयोगी व सुन्दरता प्रदान करने को कार्यक्रम प्रभारियों के साथ परिषद् के सभी सदस्यों एवम् मातृशक्ति का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

विभिन्न गतिविधियों का आयोजन

भरतपुर (निस)। पीएमश्री रा.उ.मा.वि. महाराजसर में पीएमश्री विद्यालय से संबंधित गतिविधियों एवं नो बैग-डे का आयोजन प्रधानाचार्य हेमचन्द गोयल की अध्यक्षता में दिनांक 31 अगस्त को किया गया। जिसमें कहानी सुनाने की प्रतियोगिता, इन्टरनेट वरदान या अभिशाप विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता नागरिक साक्षरता, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बहस, समानता, मतदान अधिकार पर वाद विवाद एवं स्थानीय समस्या पर व्याख्यान का आयोजन तथा विज्ञान व गणित मेले का आयोजन भी किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बढ-चढ कर भाग लिया। इस कार्यक्रम में ममता, पीयूष, देवेश कक्षा 11, आस्था एवं राधा मीना कक्षा 12, रविन्द्र कक्षा 10, हरिओम एवं कृष्ण कुणाल कक्षा 9 ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल में लक्ष्मी कंवर उप प्रधानाचार्य, गिरधारी लाल, नेत्रपाल, रवि यादव, दिलीप कुमार व्याख्याता, श्रीमती सपना अग्रवाल, संगीता अग्रवाल, सरिता शर्मा, शीशराम वरिष्ठ अध्यापक, आनन्द मिश्रा, श्रीमती मोनिका पाराशर अध्यापक आदि रहे। कार्यक्रम का संचालन विजयपाल व्याख्याता एवं हरीश चन्द सिंह चौधरी अध्यापक द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महेन्द्र सिंह, विमलेश कुमारी, मंजू शाक्य, जयप्रकाश कस्वां, वैधर्वी जैन, पुष्पेन्द्र एवं डालचंद भट्टाचार्य उपस्थित रहे।

सार-समाचार

चेतन शर्मा का अंडर-19 में चयन

भरतपुर (निस)। जिले के दाएं हाथ के युवा तेज गेंदबाज 18 वर्षीय चेतन शर्मा का अंडर-19 भारतीय क्रिकेट टीम में चयन हुआ है। जिला क्रिकेट संघ भरतपुर के सचिव शत्रुधन तिवारी ने बताया कि भारतीय क्रिकेट टीम के साथ सीरीज खेलने के लिए ऑस्ट्रेलिया की अंडर-19 क्रिकेट टीम भारत आ रही है। यह सीरीज 21 सितंबर से 26 सितंबर तक पांडिचेरी में कुल तीन एक दिवसीय मैच खेले जाएंगे और इस सीरीज में दो टेस्ट मैच भी होंगे जो कि 30 अक्टूबर और 7 अक्टूबर को चेन्नई तमिलनाडु में चार दिवसीय मैच होंगे बीसीसीआई द्वारा पूर्व में आयोजित की गई। अंडर-19 भारतीय चौलेंजर ट्रॉफी और इंडिया कैम्प में चेतन ने अच्छा परफॉर्म किया था। इसी परफॉर्मेंस के आधार पर चेतन का चयन भारतीय अंडर-19 टीम में हुआ है। चेतन शर्मा के चयन पर लक्ष्मण मंदिर चौक भरतपुर पर जश्न मनाया गया मिठाइयां बांटी गई व जोरदार हवाई आतिशबाजी की गई। इस दौरान भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता शैलेश कौशिक भाजपा के पूर्व प्रदेश मंत्री गिरधारी तिवारी एक दूसरे को माला पहनाकर हर्ष व्यक्त किया और चेतन के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर उपस्थित जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष अरुण सिंह उपाध्यक्ष विष्णु लोहिया और अजय कुमार संयुक्त सचिव अरुण कुमार गुप्ता और कोषाध्यक्ष मुनेन्द्र तिवारी सदस्यगण राहुल लोहिया,नाहर सिंह, अवदेश खटाना, त्रिलोकीनाथ शर्मा पावन कौन्तेय, उत्तम शर्मा तथा चयनकर्ता नरेश खत्री,सूरज शर्मा, लंकेश सियाराम, प्रेम सिंह और पंकज गोयल तथा क्रिकेट कोच देवेंद्र सिंह कालू तथा भारी संख्या में साथी खिलाड़ी और खेल प्रेमी उपस्थित थे।

पंचकोसी यात्रा पहुंची भोजन थाली

कामां (निस)। कामां की शान आदि वृंदावन कामवन की पंचकोसी परिक्रमा चतुर्थ दिवस पर भोजन थाली पहुंची। जहां पर कृष्ण भगवान की भोजन की थाली के समीप बैठकर कथावाचक अनिल कौशिक द्वारा भोजन थाली का महात्म बताते हुए भक्तों को कथा का श्रवण कराया। कथावाचक ने भक्तों को बताया गया कि कृष्ण भगवान द्वारा जहां पर पत्थर की थाली में भोजन किया था। जिसके अवशेक कथा के श्रवण के दौरान आपकों देखने को मिल रहें हैं। श्रोताओं ने कथा के दौरान इसी स्थान पर भोजन की रस्म अदा करते हुए साथ की साथ जलेबी स्वाद ग्रहण किया।उल्लेखनीय है कि यात्रा के भोजन थाली के पडाव के दौरान यात्री नौजवान वृद्ध महिला पुरुष कोई भी हो भोजन थाली स्थान से अपने घरों के लिए जलेबी खरीदकर परिवारजनों को खिलाते हैं जिसका प्रमाण वेदशास्त्रों में भी बताया गया है। भक्ति विभोर में झूम उठते हैं भक्तगण। प्राचीन मंदिर राधावल्लभ जी से पांच दिन तक चलने वाली पंचकोसी यात्रा के अवसर पर देश के कौने कौने से यात्रा लगाने वाले भक्त गण बाजें व ढोलक की धुनों पर नाचते गाते यात्रा के दौरान मुख्य आकर्षण का केंद्र बने रहते हैं। इन भक्तों द्वारा में कामवन की पंचकोसी यात्रा दे मेरे वीर ना माने मेरो मनुआ आज श्याम सपने में आए संगीत जैसी धुनों पर भक्तगण झूमते नजर आते हैं। यात्रा में शामिल महिला पुरुष के अलावा सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी भी इस पल को नाचते हुए यात्री गणों के साथ ठूमका लगाते हुए मुख्य आकर्षण का केंद्र बन जातें हैं।

किसान मोर्चा की बैठक सम्पन्न

भरतपुर (निस)। भारतीय जनता पार्टी कार्यालय पर किसान मोर्चा की बैठक जिला अध्यक्ष गौरव सरपंच लुधावई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष मनोज भारद्वाज एवं विषिश्ट अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष किसान मोर्चा सत्येन्द्र पथैना, सदस्यता अभियान के संयोजक मोहन रारह, जिला उपाध्यक्ष रज्जन सिंह महुआ, जिला मंत्री व सदस्यता अभियान के सह-संयोजक दुर्गेश बूटौलिया थे। सदस्यता अभियान को लेकर विस्तृत चर्चा की उन्होने बताया कि 31 अगस्त को पार्टी की सदस्यता सभी सदस्यो की समाप्त हो जायेगी तथा आगामी 2 सितम्बर से देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सदस्यता अभियान को लॉचिंग करेगें और पार्टी के कार्यकर्ता को हर बूथ पर जाकर 200-200 सदस्य जोडने का आवहान किया है किसान मोर्चा भरतपुर द्वारा हर मण्डल के हर बूथ पर जाकर ज्यादा से ज्यादा भाजपा सदस्य बनाकर पार्टी का विस्तार करने का आवहान किया। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री किसान मोर्चा रामकुँवरचुरारी ने किया। बैठक में अनुराग तमरौली, हेमूभवनपुरा, नरेष कुमार षर्मा, नीरज सत्तोगौड़, बालमुकुन्दत्योंगा, सुमरन सिंह, अन्नूहलैना, वीरेन्द्र नाथूनगला, लालसिंहजयचौली, धीरज पाण्डेय, आदि भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के कार्यकर्ता मौजूद थे।

अग्रवाल कार्यकारणी का स्वागत किया

भरतपुर (निस)। सी ब्लॉक रंजीत नगर पार्क विकास समिति के सदस्यों ने समिति सदस्य गौरव पाराषर के घर पर नव नियुक्त शहर अध्यक्ष के रूप में ओमप्रकाष सिघंल, शहर महामंत्री अनिल गोयल, कोषाध्यक्ष राकेष मित्तल का 101 फीट का सांफा बाधंकर व महाराजा अग्रसेन महाराज का दुप्पटा पहनाकर व मिठाई खिलाकर बधाई एवं शुभकामनायें दी। इस मौके पर समिति के सदस्य गिरधारी गुप्ता ने नव नियुक्त अध्यक्ष ओमप्रकाष सिघंल के सामाज सेवा के कार्यो के बारे में समिति सदस्यों को जानकारी दी। नव नियुक्त शहर अध्यक्ष ओमप्रकाष सिघंल ने पूरी युवा टीम की तरफ से सी ब्लॉक रंजीत नगर पार्क विकास समिति के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर समिति सदस्य गिरधारी गुप्ता, गौरव पाराषर, मनोज सिंह, अनिल शर्मा, योगेष शर्मा, राजेन्द्र राजेष्वर सिंह, लोकपाल सिंह, नरेन्द्र सिघंल उपस्थित रहें।

खेल सप्ताह का आयोजन

भरतपुर (निस)। रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय भरतपुर में प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ) सुजाता चौहान के नेतृत्व में खेल विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में खेल सप्ताह 26 से 31 अगस्त 2024 तक विभिन्न खेलगतिविधियाँ आयोजित की गईं। जिनके अंतर्गत सतौलिया, रस्साकसी, रुमाल झपट्टा, रेस, रोप जंपिंग तथा अन्तिम दिवस बैडमिंटन एवं 100 मीटर तथा 200 मीटर की दौड़ का आयोजन किया गया। इस सप्ताह में राष्ट्रीय खेल दिवस पर अध्ययनरत छात्राओं एवं समस्त स्टाफ को फिट इण्डिया की शपथ दिलवाई गई। इस अवसर पर एनएसएस प्रभारी एवं कार्यक्रम अधिकारी दीवान सिंह, डॉ. नटवर सिंह, अंशु गुप्ता, निशांत सिंह चौहान, खेल विभाग समिति सदस्य जगदीश कुमार, अकादमिक प्रभारी डॉ. करुणागौर, वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ. मधु शर्मा, डॉ. निशा गोयल, संकाय सदस्य विनय खंडेलवाल, योगेंद्र सिंह, देवेंद्र सिंह गहलोत आदि उपस्थित रहे।

जन्म दिवस पर राशन किट वितरित की

भरतपुर (निस)। श्री मित्र भारत संस्थान द्वारा जवाहर सिंह बेडम ग्रह राज्य मंत्री के जन्म दिवस पर जरूरतमंद परिवारों को राशन किट वितरित संस्थान के अध्यक्ष कुलदीप कटारा श्याम सिंह जघिना मधुर, दीवान सिंह शर्मा नर्सिंग अधिकारी, चंद्र भान माहोर ने वितरित की।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने की जांच

हिण्डौन सिटी। ब्लॉक की पट्टी नारायणपुर गांव से राजकीय विद्यालय में एक अध्यापक द्वारा की गई शिकायत के मामले में संभागीय की आदेश पर आज मुख जिला शिक्षा अधिकारी इंद्रेश तिवारी ने जांच की। प्राप्त जानकारी के अनुसार संभागीय आयुक्त द्वारा जनसुनवाई में प्राप्त शिकायत के लिए मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी करौली इंद्रेश तिवाडी व मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी हिंडौन कैलाश चंद मीणा को जांच के आदेश दिए। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी इंद्रेश तिवाडी ने बताया कि शनिवार को पट्टी नारायणपुर रेवई विद्यालय में पहुंचकर जांच की। उन्होंने बताया कि संभागीय आयुक्त की जनसुनवाई के दौरान पट्टी नारायणपुर (रेबई) की अध्यापिका मधुमति द्वारा एक शिकायत पेश की जिसमें प्रधानाध्यापिका माया गुर्जर पर मारपीट के आरोप लगाए। जांच में आरोपों की पुष्टि नहीं हो पाई। इस दौरानविद्यालय की जांच में अधिकारियों को गंभीर अनियमितता मिली। विद्यालय का प्रधानाध्यापक का चार्ज वरिष्ठ प्रबोधक मधुमति के पास होना चाहिए लेकिन प्रधानाध्यापक का चार्ज माया गुर्जर ने अपने पास रखा है। विद्यालय में तीन का स्टाफ होने पर भी अपना उपस्थिति रजिस्टर अलग खोल रखा है। विद्यालय में विद्यार्थी कुल नामांकन 59 । जांच दिवस पर उपस्थित 20 विद्यार्थी । इस सत्र में फल वितरण नहीं किए गए हैं । विद्यालय के कक्षा 5 के विद्यार्थी हिंदी पढने में असमर्थ है । गणित विषय में 7 से ज्यादा पहाडे नहीं जानते हैं । माया गुर्जर अपने आप को 20 जून 2016 से कोर्ट स्टे पर लगी हुई बताती हैं। जबकि जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के अनुसार जिले में कोई भी कर्मचारी कोर्ट स्टे पर नहीं है ।

विश्व हिंदू परिषद बजरंगदल के तत्वाधान में षष्ठी पूर्ति स्थापना दिवस मनाया

भरतपुर (निस)। स्थानीय श्री गंगा महारानी मन्दिर में विश्व हिंदू परिषद बजरंगदल के तत्वाधान में परिषद के स्थापना के 60वीं वर्षगांठ पर अंचल के हिंदू जन उपस्थित होकर षष्ठी पूर्ति स्थापना दिवस मनाया। स्थापना उत्सव का शुभारंभ संत किशनदास महाराज ने भारत माता के चित्र पर अभ्यागतो के द्वारा चंदन तिलक लगाकर माल्यार्पण के साथ दीप प्रज्वलन से हुआ। पश्चात उत्सव के मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद के प्रान्त मन्त्री राधेश्याम गौतम ने अपनी बात रखते हुए कहा कि वक्त की मांग है कि हिंदू संगठित हों तथा अपनी बेटियों को परी नहीं लाडली पुकारें तथा उन्हें रानी लक्ष्मीबाई व देवी दुर्गा बनने के लिए प्रेरित करें ताकि उनके भीतर शक्ति जागृत हो और हमारी बहनों

की ओर आंख उठाने वालों की आंख निकाल लेने की जज्बा पैदा हो। स्थापना उत्सव विहिप जिला अध्यक्ष लाखन पहलवान, प्रखण्ड अध्यक्ष प्रेमसिंह सिनसिनवार, जिला सुरक्षा प्रमुख नवनीत बंसीवाल, जिला मंत्री श्यामसुन्दर, नरेश खण्डेलवाल प्रान्त सेवा प्रमुख, प्रखण्ड मंत्री, तारा चन्द आजाद, लालसिंह पार्षद, नीरज चौधरी पार्षद, गौरक्षा प्रमुख मोहन पण्डित मनीष शर्मा, संजय रौतकिया, मनोज चौधरी, रामकिशोर डांगी, आदि संगठन कार्यकर्ता एवम् राजनीतिक दल तथा अधिकारी कर्मचारी वर्ग के लोगों की गरिमामय उपस्थिति रही।

हजारों धर्मप्रेमी हिंडौन से पैदल पहुंचे क्यारदा के हनुमान मंदिर

हिंडौन सिटी। हनुमान भक्त मंडल, भायलापुरा की ओर से शनिवार को क्यारदा हनुमानजी मंदिर के लिए आयोजित पदयात्रा में हजारों धर्मप्रेमी शामिल हुए। सभी पदयात्री पूरे उत्साह के साथ भायलापुरा के हनुमान मंदिर से क्यारदा के हनुमानजी मन्दिर पहुंचे। पदयात्रा को समाजसेवी चंद्रमोहन चोटमुरादा और दीनदयाल सारस्वत ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

हनुमान भक्त मंडल के संरक्षक देवेन्द्र डालू और अध्यक्ष ओमप्रकाश पिंटू ने बताया कि 14 वीं पदयात्रा में हजारों की संख्या में धर्म प्रेमी शामिल हुए। सभी लोगों ने एक साथ भायलापुरा के हनुमानजी मन्दिर में पूजा अर्चना करते हुए सामूहिक आरती की। बाद में पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

पदयात्रा में रथ पर हनुमानजी की तस्वीर स्थापित की गई और एक अन्य रथ पर हनुमानजी की जीवंत झांकी सवार की गई। पदयात्रा के जुलूस में राधा कृष्ण और शिव पार्वती की झांकी भी शामिल हुई। सभी पदयात्री नाचते गाते पूरे उत्साह के साथ क्यारदा के हनुमानजी मन्दिर पहुंचे, जहां सभी लोगों ने हनुमानजी की सामूहिक महाआरती की। इस दौरान मंदिर परिसर में महाभंडारा आयोजित हुआ, जिसमें सभी लोगों ने पंगत प्रसादी ग्रहण की। इस मौके पर क्यारदा के हनुमानजी मन्दिर पर फूल बंगला सजावट की गई। क्यारदा गांव के पंच पटेलों और युवाओं ने सभी पदयात्रियों का पेयजल और नींबू शिकंजी के साथ स्वागत किया और व्यवस्थाओं में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। इसके लिए भक्त मंडल के पदाधिकारियों ने क्यारदा के पंच पटेलों, प्रमुख ग्रामीणों, युवा कार्यकर्ताओं और मंदिर की व्यवस्थाओं से जुड़े लोगों को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया।

सेवर ब्लॉक अध्यक्ष बने शिव सिंह जाटौली रथभान

भरतपुर (निस)। राजस्थान शिक्षा सेवा प्राध्यापक संघ (रेसला) भरतपुर की जिला कार्यकारिणी की मीटिंग नबाव सिंह धानौता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

जिसमें प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवकीनंदन देवा, जिलाध्यक्ष राजेश चौधरी, कार्यकारी जिलाध्यक्ष हरवीर सिंह फौजदार, जिला मंत्री राजेन्द्र गुर्जर, जिला कोषाध्यक्ष किशन सिंह अम्वेश, शिव सिंह, ललित कुमार, गजेन्द्र सिंह पथैना एवं महावीर सिंह आदि सदस्यों ने भाग लिया।

जिलाध्यक्ष राजेश चौधरी ने बताया कि सेवर ब्लॉक की नवीन कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया।

धौलपुर विधायक के लापता होने के चस्पा किए पोस्टर

धौलपुर। धौलपुर शहर में सैंपऊ और बाड़ी रोड स्थित कई कॉलोनियां पिछले कई महीनों से जलमग्न हैं। कॉलोनी के पानी की निकासी नहीं होने से नाराज लोग कई बार प्रदर्शन भी कर चुके हैं।

जलभराव की समस्या का समाधान नहीं होने पर आनंद नगर कॉलोनी के लोगों ने विरोध का नया तरीका निकाला है। उन्होंने पूरी कॉलोनी में धौलपुर विधायक शोभारानी कुशवाहा के लापता होने के पोस्टर लगा आनंद नगर कॉलोनी धौलपुर के रहने वाले लाखन सिंह परिहार ने अपना विरोध जताते हुए बताया कि उनके मोहल्ले में लोग लंबे समय से जलभराव की समस्या से परेशान हैं। जिसको लेकर उच्च अधिकारियों से कई बार पानी निकासी के लिए गुहार लगाई है। जलभराव की समस्या से छुटकारा नहीं मिलने पर कॉलोनी के लोगों ने विधायक शोभारानी कुशवाहा से संपर्क करने की भी कोशिश की, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हुआ। स्थानीय लोगों ने बताया कि उन्होंने अपनी समस्या का समाधान करने के लिए धौलपुर विधायक को वोट दिया था। लेकिन धौलपुर विधायक जीतने के बाद ही लापता हो गई हैं। जिनसे मिलने के लिए उनके लापता होने के पोस्टर लगाए गए हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि अगर सोमवार तक प्रशासन ने उनकी समस्या का कोई समाधान नहीं किया।

पांचना के गेट खोलकर पानी की निकासी शुरू

बयाना भरतपुर (निस)। पूर्वी राजस्थान के सबसे बड़े बांध पांचना बांध के बाद अब बयाना क्षेत्र व भरतपुर जिले के सबसे बड़े बांध , बंध बारैठा बांध के लबालब होने के बाद आज शनिवार को इस बांध का एक गेट खोलकर बांध से पानी की निकासी शुरू की गई है। बांध से पानी की निकासी के साथ ही जल संसाधन विभाग व स्थानीय प्रशासन की ओर से पूरे इलाके में विशेष अलर्ट जारी कर लोगों से पानी के बहाव व भराव क्षेत्रों से दूर रहने को कहा गया है। जल जल संसाधन विभाग के सहायक अभियंता दशरथ सिंह ने बताया कि इस बांध की कुल भराव क्षमता 29 फुट अर्थात 1860 एमसीएफटी पानी की है। आज बांध का जल स्तर 27.80 फुट अर्थात 1600 एमसीएफटी होने पर और बांध के कैचमेंट एरिया से लगातार पानी की आवक को देखते हुए बांध का एक गेट खोलकर 250 क्यूसेक पानी प्रति सेकंड की स्पीड से निकासी की जा रही है। यह निकासी 27 फीट का लेवल बने रहने तक जारी रखी जाएगी। रियासत कालीन इस बांध का पानी कुकुंद नदी में होकर बहते हुए आगे जाकर गंभीर नदी में मिलता बताया है। इधर लोकदल के राष्ट्रीय सचिव सुरेंद्र सिंह कंसाना ने कहा है कि यह बांध किसानों की जमीन पर बना है इसलिए इस बांध के पानी पर पहला हक किसानों का है। इसलिए इस बांध को अन्य किसी उपयोग में लेने या और कहीं सप्लाई करने के बजाय केवल किसानों के खेतों की सिंचाई के लिए ही आरक्षित किया जाए।

दुग्धाभिषेक कार्यक्रम आयोजित

भरतपुर (निस)। बजरंग सेवक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किये जा रहे 34वें गणेश महोत्सव के तहत् शनिवार 31 अगस्त को अटलबन्द स्थित गणेश मन्दिर पर मंत्रोच्चार के साथ दुग्धाभिषेक का कार्यक्रम आयोजित हुआ। ट्रस्ट के मीडिया प्रभारी प्रकाश मोहन गुप्ता ने बताया कि शनिवार को प्रात: 9 बजे से गणेश मन्दिर पर आचार्य धरणीधर शास्त्री के नेतृत्व में 11 शास्त्रियों द्वारा 101 किलो गाय के दूध में शहद, दही, घी एवं इत्र को मिलाकर तैयार किये गये पंचामृत से मंत्रोच्चार के साथ दुग्धाभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। इससे पूर्व विभिन्न सुगन्धित द्रव्यों से स्नान कराकर श्री गणेश जी की सामूहिक आरती का भी आयोजन किया गया। जिसमें ट्रस्ट के मुख्य संरक्षक विनोद कोठारी, अध्यक्ष मनीष सिंघल, उपाध्यक्ष संजय गर्ग, मंत्री प्रदीप अग्रवाल, विजय जैन, नीरज गोयल, रमेष गर्ग, गिरधारी गुप्ता, अनिल मिश्रा, महेष गोयल, अनिल बंसल, ष्याम अरोडा आदि सहित बडी संख्या में पदाधिकारी एवं सदस्यगणों ने सपरिवार शामिल होकर पूजा अर्चना की।

व्यापारियों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा

गंगापुर सिटी मे जिला कलेक्टर ज्ञापन देते व्यापारी।

गंगापुर सिटी। व्यापारियों ने नगर परिषद पर अतिक्रमण हटाने के नाम पर परेशान और अभद्रता करने का आरोप लगाया है। इस मामले में शनिवार को केमिस्ट एंड ड्रग एसोसिएशन गंगापुर सिटी के बैनर तले व्यापारियों ने कलेक्टर डॉक्टर गौरव सैनी को ज्ञापन देकर शिकायत करते हुए इस मामले में कार्रवाई करने की मांग की है। केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल ने बताया कि गंगापुर नगर परिषद क्षेत्र में अतिक्रमण दस्ते द्वारा व्यापारियों से अभद्रता और अव्यवहारिक आचरण किया जा रहा है। दस्ते की टीम द्वारा दुकानों के अंदर घुसकर रखे हुए सामान जैसे टेबल, बैंच, कुर्सी इत्यादि को जबरन उठाकर ले जाया जा रहा है, जबकि यह सभी व्यापारियों ने अपने तय परिसर की सीमा में ही रखे हुए हैं।

व्यापारियों द्वारा विरोध करने पर अतिक्रमण दस्ते में शामिल सफाई कर्मचारी, गार्ड और अन्य कर्मचारियों द्वारा अभद्रता, गाली गलौच करते हुए मारपीट की जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि शुक्रवार को अभियान के दौरान एसोसिएशन के सचिव ओमप्रकाश अग्रवाल उदेई मोड गंगापुर सिटी के स्टोर पर कर्मचारियों ने गाली गलौच, अभद्रता और जबरदस्ती करते हुए दुकान के अंदर बैठे हुए मरीजों को उठाते हुए बैंच को उठाकर ले गए। जब इस मामले में आयुक्त से वार्ता करने का प्रयास किया तो टीम ने मारपीट करने का प्रयास किया। जिसका व्यापारी और दुकानदार कडे शब्दों में निंदा करते हैं। गंगापुर केमिस्ट एसोसिएशन और उनके सदस्यों ने कहा कि गंगापुर सिटी में सभी व्यापारी अतिक्रमण नहीं चाहते और शहर को स्वच्छ रखना चाहते हैं। इसमें भी प्रशासन का हर संभव सहयोग करने को भी तैयार हैं और पहले भी व्यापारियों ने प्रशासन का हर संभव सहयोग किया है।

औधोगिक स्मार्ट सिटी बनाने के लिए लिखा पत्र

भरतपुर (निस)। केंद्र सरकार द्वारा राजस्थान के जोधपुर-पाली में घोषित किये गये औद्योगिक स्मार्ट सिटी के तर्ज पर डीग जिले के जुरहरा में औद्योगिक स्मार्ट सिटी बनाने के लिए समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता ने केन्द्रीय मंत्री अनिल वैष्णव को पत्र लिख कर आग्रह किया है। गुप्ता द्वारा लिखे गये पत्र में कहा है कि जुरहरा के पास रीको द्वारा करीब 40 एकड भूमि पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया था लेकिन जरूरी सुविधाएँ उपलब्ध कराने की वजह से मात्र 25 लघु उद्योग इकाइयां स्थापित हो सकी। इनमे से अधिकांश बंद हो गई है। अब इस औद्योगिक क्षेत्र को नई दिल्ली से फोर लेन सडक मार्ग से जोडने के अलावा बिजली तंत्र को भी सुदृढ किया गया है। जुरहरा औद्योगिक क्षेत्र के आस-पास काफी भूमि खाली है।

कार्यालय ग्राम पंचायत निधेराकला, पंचायत समिति सैपऊ (धौलपुर)

क्रमांक/ग्रा.प./ई.नि.नि.सा./2024/01 दिनांक: 31.08.2024

ई-निविदा सूचना 01/2024-2025

ग्राम पंचायत परिक्षेत्र में महानरेगा एवम् ग्रामीण विकास एवम् पंचायतीराज की विभिन्न योजनाओं के तहत सम्पूर्ण वर्षवार स्वीकृत निर्माण कार्यों में निर्माण सामग्री आपूर्ति अनुमानित लागत लगभग 90.00 लाख के लिये सक्षम श्रेणी के पंजीकृत फर्मों से ऑनलाइन ई-निविदा दिनॉक 06.09.2024 को समय 10:00 एएम तक आमंत्रित की जाती है, जिसका UBN No. ZDH2425GLRC00254 है। विस्तृत विवरण https://.sppp.rajasthan.gov.in व https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा व डाउनलोड किया जा सकता है।

सरपंच ग्राम पंचायत निधेराकला — ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत निधेराकला

प्ररूप-10 (नियम 6 (7))

प्राधिकृत अधिकारी नगरपरिषद, करौली

लोक सूचना

क्रमांक:-1553-58 दिनांक: 30.08.2024

श्री राजेश कुमार पुत्र गोपाल सिंह, श्री जयसिंह पुत्र श्री गरीबा सिंह निवासी कुडगॉव करौली एवं कंचनपुरा करौली द्वारा मण्डरायल रोड शिकारगंज सर्किल के पास करौली जिला करौली के पास स्थित निम्न खसरा नम्बरान हेतु इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अधिभृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं, अर्थात:-

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नं.	क्षेत्र
करौली	करौली	7207, 7216/2	02 बीघा 11 बिस्वा एवं 02 बीघा 08 बिस्वा

इसलिए, इसके द्वारा समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 07 दिवस के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 30.08.2024 को जारी की गयी। (करनी सिंह) प्राधिकृत अधिकारी, आयुक्त नगरपरिषद, करौली

निर्मल कैंपस में हनुमान जी की सवा 25 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित

हिंडौन सिटी । शहर के बयाना रोड स्थित निर्मल एजुकेशन ग्रुप कैंपस में हनुमान जी की सवा पच्चीस फीट ऊंची प्रतिमा की स्थापना की गई। जिले भर में सबसे ऊंची इस प्रतिमा के शनिवार को हुए ऐतिहासिक समारोह में ग्रुप के 3100 विद्यार्थी, शिक्षक और स्थानीय लोग साक्षी बने। विधिवत पूजन के साथ सामूहिक रूप से किए गए हनुमान चालीसा के पाठ से पूरे शहर का माहौल भक्तिमय हो गया। निर्मल एजुकेशन ग्रुप के निदेशक मनीष चौधरी ने बताया कि एजुकेशन कैंपस में आने वाले सभी विद्यार्थियों को वीर बजरंग बली के दर्शन हो और विद्या बुद्धि और स्वास्थ्य का वरदान मिले, इस उद्देश्य से निर्मल एजुकेशन कैंपस में हनुमान जी की सवा पच्चीस फीट ऊंची एक आकर्षक प्रतिमा स्थापित की गई है।

शनिवार को सुबह 8 बजे शुभ मुहूर्त में हनुमान जी की इस विशालकाय प्रतिमा का आचार्य मनीष शास्त्री व ज्योतिष आचार्य लक्ष्मी नारायण पाठक सहित कई विद्वान पंडितों ने वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ पूजन कराया। इस अवसर पर निर्मल हैप्पी उच्च माध्यमिक विद्यालय, निर्मल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, निर्मल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निर्मल पब्लिक स्कूल, निर्मलआईआईटी एंड मेडिकल अकैडमी, निर्मल पैरामेडिकल कॉलेज सहित विभिन्न संस्थाओं के 3100 से ज्यादा विद्यार्थियों और अध्यापकों ने हनुमान चालीसा का सामूहिक रूप से पाठ किया।इस दौरान पंडाल में मौजूद सभी लोग हनुमान जी की भक्ति में लीन हो गए और झूम उठे । इसके बाद महा आरती का आयोजन हुआ और प्रसादी वितरित की गई। इस अवसर पर उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक नंद सिंह विशेष रूप से मौजूद रहे ।

जिन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए वीर बजरंगबली की इस विशालकाय आकर्षक प्रतिमा के महत्व को समझाते हुए उनकी पूजा के महत्व पर भी प्रकाश डाला और बताया कि बुद्धि और विद्या के दाता हनुमान जी की पूजा करने से स्वास्थ्य,शिक्षा और संपन्नता प्राप्त होती है। इस अवसर पर निर्मल एजुकेशन ग्रुप के निदेशक चौधरी सहित सहायक निदेशक प्रशांत चौधरी, निर्मल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर विजेंद्र सिंह आदि ने विद्वान पंडितों व अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

आयोजित कार्यक्रम में निर्मला एजुकेशन ग्रुप की संस्थापिका स्वर्गीय निर्मल चौधरी एवं संस्थापक स्वर्गीय राजेंद्र चौधरी की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण किया गया। इस दौरान निर्मला एजुकेशन ग्रुप के सभी अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

18 साल पूर्व बिछुडी ललिता के पति से हुआ मिलन

भरतपुर (निस)। अपना घर आश्रम में शनिवार को कर्नाटक के गांव मटौली, थाना, अफजलपुर, जिला गुलबर्गा से अपनी पत्नि को लेने आए पति शिवलिगप्पा श्रृंगार का सारा सामान लेकर आए और यही पर सिंदूर का टीका लगाकर मंगलसूत्र, कंगन, झुमके, बाली व वस्त्र पहनाएं। उन्होंने बताया कि यह उनकी पहली शादी थी। जबकि उन्होंने ललिता के घर से निकलने के बाद दूसरी शादी कर ली थी और ललिता के दो छोटे बेटे एवं एक बेटी का पालन पोषण इनकी दूसरी पत्नी महानंदा ने किया। अपनाघर के 24 साल के इतिहास में इस तरह का यह पहला मामला है जहां काफी लोग अपने परिजनों को ले जाने से बचते है वहीं कहते है कि सौतन तो आटे की भी बुरी होती है लेकिन महानंदा की उस सौतन ने संस्कारों के माध्यम से यह गलत साबित कर दिया। इसे विधि का विधान कहे या किस्मत का लेखा 18 साल पूर्व बिछुडी ललिता के पति ने अपने तीन बच्चों को पालने के लिए दूसरी शादी की। लेकिन जब घर पर सूचना पहुंची तो दूसरी पत्नी महानंदा ने अपने पति शिवलिगप्पा को उनकी पूर्व पत्नी या ये कहे कि सौतन को मंगलसूत्र सहित 16 श्रृंगार का सामान लेकर अपनाघर आश्रम भेजा तथा अपना घर में आकर एक बार उन्हें मंगलसूत्र पहनाया तथा मांग भरने के साथ ही कंगन, कानों के झुमके व नाक में बाली भी पहनाई। वहीं लाल रंग की साडी एवं श्रृंगार आदि का जो भी सामान लेकर आए थे वह पहनाया, जिस तरह से नव विवाहिता को ले जाते वैसे ही यहां से लेकर गए। बताते चले यह महिला 2013 में चेरिटेबल ट्रस्ट सूरत में रेस्क्यू की गई थी और स्थान अभाव के कारण अपना घर भरतपुर में भर्ती कराया था। इनका तभी से उपचार चल रहा था, इनके स्वास्थ्य में सुधार होने के उपरांत इन्होंने अपना पता बताया और इनके बताए गए पते पर पुलिस के माध्यम से संपर्क किया गया। इनके पति शिवलिगप्पा ने बताया कि जब ललिता घर से निकली थी तब दो बेटे और एक छोटी बेटी थी उनके परिवरिश के लिए मैने दूसरी शादी महानंदा के साथ कर ली। दूसरी पत्नी महानंदा ने इन तीनों बच्चों की परिवरिश की पढा लिखाकर बडा किया। जिनमें बडा विनायक बैंगलोर यूनिवर्सिटी में संविदा पर क्लर्क, छोटा बेटा भोपाल में कपडे की फैक्टी में जॉब करते है, जबकि बेटी की शादी भी कर दी। यहां की सूचना लेकर जैसे ही पुलिस वाले घर पहुंचे तो भरोसा ही नहीं हुआ कि पहली पत्नी जिंदा है, हम तो मृत समझ कर दूसरी शादी भी कर चुके थे, फिर उन्होंने वीडियो कांफ्रसिंग से बातकर सत्यापन के उपरांत यह मालूम किया।

सार-समाचार

खिलाडी पूनम शर्मा का सम्मान किया

भरतपुर (निस)। इंडियन मास्टर वेट लिफ्टिंग फेडरेशन द्वारा तृतीय मास्टर्स वेट लिफ्टिंग चैम्पियनशिप 2024 उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में स्थित कान्हा हवेली महुवा वाग में 28 से 29 अगस्त को आयोजित हुई। जिसमें देश के समस्त प्रान्तों से सैकडों मास्टर्स वेट लिफ्टिंग महिला एवं पुरूष खिलाडियों ने भाग लिया। जिसमें राजस्थान से पावर लिफ्टिंग कोच व वेट लिफ्टिंग खिलाडी पूनम शर्मा ने भी अपने भार 55 किलो ग्राम महिला वर्ग में खेल कर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गोल्ड मैडल हांसिल कर भरतपुर व राजस्थान का नाम रोशन किया। बतादें कि पूनम शर्मा ने गत राज्य स्तरीय तृतीय मास्टर्स वेट लिफ्टिंग चैम्पियनशिप 2024 प्रतियोगिता जोकि जोधपुर के महर्षि दयानंद स्मृति भवन में आयोजित हुई थी। इस प्रतियोगिता में पूनम ने अपने भार में भी राज्य स्तर पर गोल्ड मैडल प्राप्त कर भरतपुर का नाम रोशन किया है तथा वह पावर लिफ्टिंग में राज्य स्तर पर गोल्ड व नेशनल स्तर पर कांस्य एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त कर देश, प्रदेश व भरतपुर का नाम कर चुकी है तथा उनके इस उत्कृष्ट खेल समाचार को सुन खेल प्रेमी व सामाजिक संस्थाएँ, गणमान्य व्यक्तियों में खुशी की लहर दौड गई जिन्होंने उनको इस उपलब्धि के लिए बधाईयां दीं तथा भरतपुर आगमन पर उनके खिलाडी व खेल प्रेमी तथा गणमान्य लोगों ने रेलवे स्टेशन पर पहुँच माला पहनाकर मिठाई खिलाकर स्वागत किया।

निरीक्षण लिया

भरतपुर (निस)। अहले इस्लाम शाही कब्रिस्तान जवाहर नगर भरतपुर में नगर निगम भरतपुर द्वारा सफाई कार्य का जायजा लिया गया पाया कि नगर निगम द्वारा बेहतरीन तरीके से बबूलों की कटाई कर साथ ही साथ उन्हें हटाने का कार्य कमेटी के कहे अनुसार किया जा रहा है। निगम कर्मीयों द्वारा काफी पेड तथा खूशबूदार फूल के पौधे भी लगाये गये हैं। कमेटी ने देखा कि युआईटी द्वारा जो मकान बाउण्ड्री के सहारे बने हुए हैं। वह अपने घरो की गन्दगी कूडा करकट नाली शाही कब्रिस्तान की ओर कर रखी है। इनको बन्द कराया जाये। इनके नोटिस दिया जावे। नगर निगम के नरेगा कर्मीयों ने काफी महनत कर शाही कब्रिस्तान में से गन्दगी को हटाया है। नगर निगम से मांग है कि शाही कब्रिस्तान में भरे हुए पानी को निकलवाया जाये ताकि मच्छर व गन्दगी पैदा न हो। कमेटी अध्यक्ष हाजी गुल्लू की ओर से अपील है कि कमेटी के मेम्बर शाही कब्रिस्तान जवाहर नगर में जाकर सफाई अभियान में सहयोग करें। कमेटी के अध्यक्ष हाजी गुल्लूखां, अलीमुददीन, छोटे खान, अहसान कुरेशी मोलाना आदि मौजूद थे।

जिला कलेक्टर से मुलाकात की

करौली (नि.स.)। भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष आशुतोष तिवारी के नेतृत्व में भाजपाइयों ने जिला कलेक्टर से मुलाकात कर बरसात के बाद होने वाली मौसमी बीमारियों को लेकर अवगत कराया। करौली भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष आशुतोष तिवारी ने बताया कि जिला कलेक्टर को बारिश के बाद होने वाली मौसमी बीमारियों को लेकर करौली शहर में हर गली, मोहल्लो, कालोनियों मे फोगिंग, डीडीटी के छिड़काव बारिश के जमा पानी को निकालने की व्यवस्था, सफाई तथा अस्पताल में सफाई की व्यवस्था तथा पर्याप्त बेड आदि की व्यवस्था को लेकर अवगत कराया इस दौरान जिला महामंत्री धीरेंद्र बैसला, विधानसभा संयोजक योगेश शर्मा उर्फ योगी, तेजेंद्र सिंह, आशीष जैन, धर्म सिंह जादौन आदि मौजूद रहे।

स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पिलाई

करौली (नि.स.)। राजकीय जिला आयुर्वेदिक चिकित्सालय करौली के फूटाकोट शाखा आंचल प्रसूता केंद्र पर नवजात से 5 वर्ष तक के बच्चों को स्वर्ण प्राशन की ड्राप पिलाई गईजिला आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ नरेश शर्मा व डॉ उमेश शर्मा ने बताया कि शिविर के दौरान 5 वर्ष तक के 119 बालकों को स्वर्ण प्राशन की ड्रॉप पिलाई गई। स्वर्ण प्राशन ड्रॉप का आयुर्वेद मतानुसार स्वर्ण ब्राह्मीवला,शंखपुष्पी,वचामंजिष्ठा,हरीतकी विभीतक, आमलकी मधु आदि रसायन औषधि द्रव्यों के द्वारा निर्माण किया जाता है इसके सेवन से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है शारीरिक एवं बौद्धिक विकास होता है मौसमी बीमारियों से बालक ग्रसित नहीं होता है यह स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पुष्य नक्षत्र के दिन आयुर्वेद विभाग की ओर से निशुल्क पिलाई जाती है उन्होने बताया कि गत 30 अगस्त को 66 बच्चों को व 31 अगस्त को 53 बच्चो को फूटाकोट आयुर्वेद चिकित्सालय पर स्वर्ण प्राशन ड्रॉप पिलाई गई।

खरपतवार हटाकर थांवले बनाये

भरतपुर(निस)। भुसावर स्थित कृषि महाविद्यालय पर राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में एनएसएस वॉलण्टियर्स ने महाविद्यालय परिसर में इस वर्ष नये लगाये पौधों के आस-पास से खरपतवार हटाकर थांवले बनाये तथा महाविद्यालय की सडक व मार्गों की साफ-सफाई की। महाविद्यालय के डीन डॉ उदय भान सिंह ने बताया कि वर्षा ऋतु में घास-फूँस व खरपतवार ज्यादा पनपते हैं जो कि विषेषकर नये लगाये पौधो की वृद्धि रोक देते हैं। क्योकि ये पौधों के साथ पोषक तत्व, धूप, स्थान आदि के लिए प्रतियोगिता करते हैं। जिससे पौधों को कमधूप व पोषक तत्व मिलते हैं तथा जडों का उचित विकास भी नही हो पाता। साथ ही खरपतवार होने से पौधों पर कीट एवं रोगों का प्रकोप भी अधिक होता है। अत: सितम्बर माह मे बगीचों की साफ-सफाई आवष्यक रूप से करनी चाहिए। एनएसएस प्रभारी डॉ मोहित कुमार ने बताया कि एनएसएस वॉलण्टियर्स ने महाविद्यालय परिसर मे 2 घण्टे श्रमदान किया। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक जगहों व सम्पत्तियों की देखरेख व सुरक्षा करना हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

निरीक्षण किया

करौली(नि.स.)। आयुर्वेद विभाग के उप निदेशक डॉ नंद कुमार शर्मा ने शनिवार को चैनपुर,रामपुरा,मासलपुर,डॉडा और रतियापुरा औषधालयों का आकस्मिक निरीक्षण किया और कार्मिकों को पौधारोपण के लिए निर्देश देते हुए औषधीय पौधें लगाने के लिए पाबंद किया।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में नाम जोडने के संबंध में निर्देश जारी

करौली (नि.स.)। जिला रसद अधिकारी ने एक आदेश जारी कर बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजनांतर्गत ऐसी महिलाएँ जिनका नाम विवाह होने पर पिता के राशनकार्ड से हटा दिया गया है लेकिन पति के राशन कार्ड में नहीं जोडा गया है उनका नाम पति के राशन कार्ड में जोडने हेतु विभाग द्वारा प्रावधान किया गया है

उन्होने बताया कि ऐसी महिलाएँ ई-मित्र के माध्यम से आवेदन कर अपना नाम पति के राशनकार्ड में जुडवा सकेंगी। इसके लिए यह आवश्यक होगा कि महिला के पिता व पति दोनों का राशनकार्ड राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित हों।

उक्त के साथ ही खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित राशनकार्डों में 0 से 18 वर्ष के बच्चों के नाम भी राशनकार्ड में जोडने हेतु पोर्टल विभाग द्वारा खोला गया है। जिला रसद अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजनांतर्गत जिन आवेदकों द्वारा पूर्व में आवेदन किया जा चुका है एवं जिनका निस्तारण नहीं किया गया है ऐसे आवेदनों का निस्तारण किए जाने हेतु विभाग द्वारा पोर्टल खोला गया है।

जिसमें प्रथम चरण में प्राथमिकता से अन्तोदय परिवार,बीपीएल परिवार, एकल महिलाएँ,कचरा बीनने वाले परिवार, कुष्ठ रोगी,आस्था कार्ड धारी परिवार,सिलकोसिस रोग से ग्रसित व्यक्ति परिवार,बहु विकलांग एवं मंदबुद्धि व्यक्ति,पालनहार योजनांतर्गत लाभार्थी परिवार, नि:संतान वृद्ध दम्पत्ति व वृद्ध दम्पत्ति जिनके केवल दिव्यांग संतान है को जोडा जाएगा।

प्रथम चरण के लंबित आवेदन शून्य होने पर द्वितीय चरण प्रारम्भ किया जावेगा।

नन्दे बाबा की जात में हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी

करौली (नि.स.)। करौली जिला मुख्यालय के पास तुलसीपुरा ग्राम पंचायत के टोंका-खरेटा गांव स्थित नन्दे भूमिया नन्दे बाब) देवस्थल पर शनिवार को वार्षिक जात मेला आयोजित हुआ। इस मौके पर दर्शनों के लिए जिले सहित दूरदराज शहरों और गांवों से हजारों श्रद्धालुओं की भीड उमडी। श्रद्धालुओं ने नन्दे भूमिया की पूजा-अर्चना कर मनौती मांगी देवस्थल पर दिनभर नंदे भूमिया के जयकारे गूंजते रहे। वही ग्राम पंचायत कि ओर से कु'ती प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

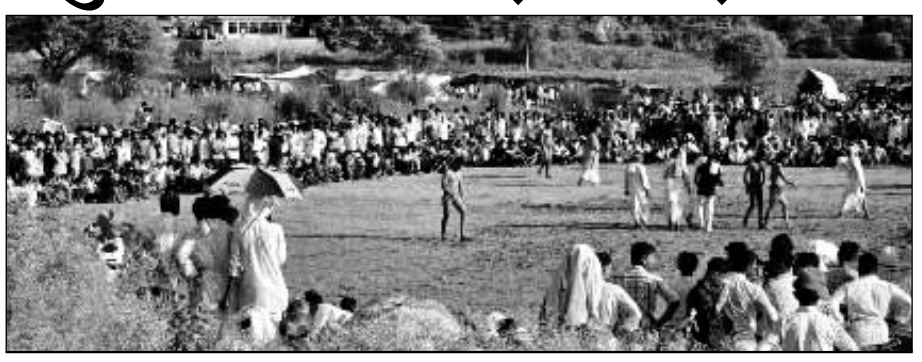

करौली के निकट नन्दे भूमिया के स्थान पर कुश्ती दंगल का आंनद लेते ग्रामीण।

मेले को लेकर प्रात: से ही श्रद्धालुओं का नन्दे भूमिया मंदिर पहुंचना शुरू हो गया जो दिन चढने के साथ ही बढ़ता गया। श्रद्धालुओं की भीड और जयकारों से क्षेत्र का माहौल धर्ममय हो गया। इस मौके पर करौली सहित नादौती, श्रीमहावीरजी, हिण्डौन, गंगापुर सिटी, भरतपुर,आगरा,धौलपुर सहित अन्य स्थानों के श्रद्धालु पहुंचे और मंदिर में धोक लगाई। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं रंग-बिरंगे परिधान पहने गीत और भजन गाते हुए नंदे भूमिया की जात करने पहुंची। इस दौरान हजारों श्रद्धालु पैदल ही पहुंचे जबकि बडी संख्या में श्रद्धालु ट्रैक्टर, जीप, कार,टेम्पो,बस आदि से जात करने पहुंचे।

गाजे बाजे के साथ पदयात्रा रवाना

टोडाभीम। उपखंड मुख्यालय की समीपवर्ती गांव पाडला से करीरी में स्थित भैरू बाबा की पदयात्रा गाजे बाजे के साथ रवाना हुई। एक दिन पूरे गांव में पदयात्रा के लिए सभी को अनाउंसमेंट किया गया। और आज विधि विधान के साथ पहले तो पूजा अर्चना की गई ।और उसके बाद यात्रा को सरपंच प्रतिनिधि राजेंद्र सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। पाडला गांव में स्थित पहाड़ के ऊपर भैरू बाबा मंदिर पर लोगों ने पूजाअर्चना की और वही झंडा का पूजन किया गया ।और उसके बाद पूजन कर यात्रा को रवाना किया।

नाचते कूदते यात्री हुये रवाना

वही भैरू बाबा की यात्रा में पद यात्री नाचते कूदते हुए बाबा के दरबार के लिए रवाना हुए महिला व पुरुष सभी एक जगह इकट्ठा हुए और भैरू बाबा का जोरदार जय कारा लगाकर यात्रा में शामिल हुए वही भैरू बाबा के सुंदर-सुंदर भजनों पर महिलाओं और पुरुषों ने नृत्य किया और यात्रा रवाना हुई यात्रा का जगह लोगों द्वारा जलपान करवा कर स्वागत8 सत्कार किया गया।

यात्रा की पहुंचने पर किया जाएगा भंडारा

वही पूरण मीना व शिवराम मीना कलुआराम मीना ने बताया कि यात्रा के पहुँचने पर सबसे पहले निशान भैरू बाबा के मंदिर पर चढाया जायेगा। उन्होंने बताया कि करीरी का भैरू बाबा का मंदिर पहाड़ पर स्थित है। जो भी क्षेत्र के प्रसिद्ध आस्था धाम में से एक मंदिर है। वही यात्रा के पहुंचने के बाद भोग प्रसादी लगाकर भंडारे का भी आयोजन किया जायेगा। जिसमें सभी यात्रियों को प्रसादी खिलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि हर वर्ष बाबा भैरू बाबा के मंदिर में यात्रा लेकर जाते हैं। और इस वर्ष भी धूमधाम के साथ बाबा की यात्रा जा रही है। जिसमें लोगों का खूब उत्साह नजर आ रहा है।

ये रहे मौजूद

वही यात्रा की शुभारंभ के दौरान रामचरण मीना,बबली पाडला,बबली मीना,बंटी मीना ,पूरण ,शिवराम ,कलुआ, उदयचंद,भरोसी मीना, रामपाल,बाबू मीना, अमृत ,लाली पाडला, राजेन्द मीना, मोहन पेटल रामप्रसाद मीना ,राधाकृष्ण बाबुजी सहित महिला व पुरुष मौजूद रहे।

शिवरों का आयोजन 3 सितम्बर से

करौली(नि.स.)। जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने एक आदेश जारी कर बताया है कि जिले में 3 से 27 सितम्बर तक यूडीआईडी दिव्यांगजन 'गिविरो का आयोजन ब्लॉकवाईज किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिसके अन्तर्गत स्वावलम्बन पोर्टल के माध्यम से दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी किये जाने है। इसके अलावा जिले में विभागीय दिव्यांगजन पंजीयन पोर्टल पर पंजीकृत आवेदनों का निस्तारण कर यूडीआईडी कार्ड जारी कर विभागीय योजनाओं से लाभांवित किया जाना है। शिविर का आयोजन व स्थान निम्न प्रकार रहेंगे 3 सितम्बर को पंचायत समिति करौली, 11 सितम्बर को पंचायत समिति मासलपुर, 12 सितम्बर को पंचायत समिति मण्डरायल, 18 सितम्बर को निर्देश जारी कर दिये है।

नेत्रदान जागरूक संगोष्ठी का आयोजन

धौलपुर । समदर्शी क्षमताविकास अनुसंधान मंडल (सक्षम) धौलपुर के द्वारा नेत्रदान जागरूक पखवाडा के तहत एक संगोष्ठी का आयोजन राजकीय गर्ल्स उच्च माध्यमिक विद्यालय धौलपुर में किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती अर्चना मिश्रा जी ने की तथा मुख्य स्थिति के रूप में प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर मुनेंद्र गर्ग मंच पर विराजमान थे। विशेष अतिथि के रूप में जिला सचिव (सक्षम) दिनेश गर्ग, शंकर लाल सक्सेना, तथा दिहोली की प्रिंसिपल गोगना मैडम थी। प्रारंभ में मंचासीन अतिथियों का परिचय के बाद संगठन का पट्टा देकर उनका स्वागत किया गया संगठन के बारे में जानकारी देते हुए अशोक सिंघल प्रांतीय प्रचार प्रमुख ने कहा कि 16 साल पहले इस संगठन का नागपुर में प्रारंभ हुआ था जो देश के 400 जिलों में कार्य रत हैं यह संगठन दिव्यांग व्यक्तियों/ महिलाओं की क्षमताओं का विकास कर उन्हें सक्षम बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। मुख्य अतिथि डॉक्टर गर्ग ने कहा की आंख है तो जहान है तो हमें आंखों की सुरक्षा करते रहनी चाहिए और रक्तदान की तरह ही नेत्रदान के लिए लोगों को प्रेरित करना चाहिए जिला सचिव दिनेश गर्ग कहा कि आपके आसपास ऐसी कोई दिव्यांगों जिन्हें किसी चीज की आवश्यकता हो तो हमारी संस्था को सूचित करें नेत्रों की सुरक्षा पर ध्यान दें।

विशेष लोक अदालत का आयोजन

गंगापुर सिटी । माननीय राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार शनिवार को जिला मुख्यालय सहित समस्त तालुकाओं गंगापुर सिटी, खण्डार, बौंली एवं बामनवास पर भारतीय स्टेट बैंक के प्री-लिटीगेशन स्तर के प्रकरणो के निस्तारण हेतु विशेष लोक अदालत का आयोजन किया गया। भारतीय स्टेट बैंक के प्री-लिटीगेशन स्तर के प्रकरणों के निस्तारण हेतु जिला मुख्यालय पर 02 बैचों का गठन कर विशेष लोक अदालत में रैफर प्रकरणों का आपसी समझाईश व राजीनामा के माध्यम से प्रकरणों का निस्तारण किया गया। विशेष लोक अदालत हेतु गठित बैंच संख्या-01 के अध्यक्ष श्रीमती भावना भार्गव व बैंच संख्या-02 के अध्यक्ष चेतन कुमार गोयल ने उपस्थित आमजन को बताया कि दिनांक 28 09 .2024 को वर्ष की तृतीय राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। माननीय रालसा जयपुर के निर्देशानुसार राष्ट ीय लोक अदालत से पूर्व विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु प्रिकाउंसलिंग के दौरान बैंक एवं वित्तीय संस्थाओं के प्रिलिटिगेशन स्तर के प्रकरणों का पूर्व में लोक अदालत के माध्यम से अधिकाधिक निस्तारण किए जाने हेतु बैंक अधिकारीगण एवं वित्तीय संस्थाओं के अधिकारीगण को निर्देश प्रदान किए।

ई-केवाईसी होने पर 450 रुपए में मिलेगा घरेलू गैस सिलेंडर

गंगापुर सिटी । प्रदेशभर के साथ गंगापुर सिटी में 450 रुपए में घरेलू गैस सिलेंडर लेने के लिए राशन कार्ड को एलपीजी आईडी व जनआधार से सीडिंग करवाना अनिवार्य है। जिला रसद अधिकारी अंकित पचार ने बताया कि खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग राजस्थान सरकार द्वारा जिले में रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना के तहत पूर्व में प्रधानमंत्री उज्जवला योजना एवं

- **राशन कार्ड को एलपीजी आईडी व जनआधार से सीडिंग कराना जरूरी**

चयनित बीपीएल परिवार (राजस्थान राज्य के) के साथ राजस्थान प्रदेश के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित परिवार पात्र होंगे। रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना संपूर्ण राजस्थान राज्य में एक सितंबर को लागू किया जाएगा।

योजना के तहत प्रधानमंत्री उज्जवला योजना एवं चयनित बीपीएल परिवार (राजस्थान राज्य के) के साथ-साथ राजस्थान प्रदेश के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित परिवारों को माह में अधिकतम एक गैस सिलेंडर केन्द्र सरकार द्वारा दी जा रही, सभी सब्सिडी योजनांतर्गत देय सब्सिडी के बाद मात्र 450 रुपए में सिलेंडर दिया जाएगा। योजना में माह की गणना माह की प्रथम तारीख से अंतिम तारीख तक की जाएगी।

एलपीजी सिलेण्डर की फाइल।

रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के ऐसे परिवार पात्र होंगे, जिनके द्वारा ई-केवाईसी करवाई जा चुकी है।

ऐसे परिवारों को रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए अपने राशन कार्ड को एलपीजी आईडी व जनाधार से सीडिंग करवाए जाने के बाद सब्सिडी का लाभ प्राप्त होगा।

वर्तमान में सीडिंग का कार्य ई-मित्र व उचित मूल्य दुकानों पर स्थापित पोस मशीन के माध्यम से किया जा रहा है। योजना के लाभ के लिए उपभोक्ता को नजदीकी ई-मित्र या उचित मूल्य दुकानों पर जाकर सीडिंग करवाने की व्यवस्था की जा चुकी है। गंगापुर सिटी जिले मे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित परिवारों की संख्या 1 लाख 33 हजार 529 है।

इस योजना के अंतर्गत एक सितंबर से अथवा सितंबर माह में पंजीयन (एलपीजी आईडी को ई-केवाईसी तथा जनाधार सीडिंग) कराने पर योजना का लाभ सितंबर माह से तथा किसी आगामी माह में पंजीयन कराने पर उस माह से गैस सिलेंडर पर सब्सिडी का लाभ दिया जाएगा।

सूत्रीय मांगों को लेकर शिक्षकों ने सौंपा ज्ञापन

धौलपुर। शिक्षकों को गैर शैक्षिणक कार्यों से मुक्त करने एवं शिक्षक स्थानांतरण नीति बना कर तृतीय श्रेणी शिक्षकों सहित सभी संवर्गों के स्थानांतरण शुरू करने की मांग को लेकर राजस्थान पंचायती राज एवं माध्यमिक शिक्षक संघ के राज्य व्यापी आंदोलन के द्वितीय चरण में प्रदेश महामंत्री राजेश शर्मा एवं जिलाध्यक्ष हरीसिंह गुर्जर की अगुवाई में संगठन के पदाधिकारियो ने जिला कलेक्ट्रेट धौलपुर पर प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव के नाम जिला कलेक्टर श्रीनिधि बीटी को पांच सूत्रीय मांग पत्र सौंपा है।

इस दौरान संघ के प्रदेश महामंत्री राजेश शर्मा ने कहा कि काफी समय से तृतीय श्रेणी शिक्षकों के स्थानांतरण नहीं होने से हजारों शिक्षक घर परिवार से दूर नौकरी करने को बाध्य हो रहे हैं।

संघ के जिला अध्यक्ष हरीसिंह गुर्जर ने कहा चार सत्रों से शिक्षकों की पदोन्नितियां नहीं होने से हजारों की तादात में स्कूलों में वरिष्ठ अध्यापक, व्याख्याता प्रिंसिपल तक के पद रिक्त होने से बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही है।

संघ के सभाध्यक्ष सुरेंद्र रावत ने पदोन्नित के वर्तमान नियमों में संशोधन कर संख्यात्मक आधार पर सामाजिक विज्ञान, कृषि वाणिज्य, कला स्नातक शिक्षकों को पदोन्नित के विशेष अवसर मुहैया कराने की मांग की।

भाजपा मण्डल के कार्यकर्ताओ की सदस्यता अभियान को लेकर बैठक संपन्न

करौली (नि.स.)। कैलादेवी भाजपा मण्डल के कार्यकर्ताओ की बैठक नरसी गेस्ट हाउस मे संपन्न हुई जिसके मुख्य अतिथि पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष एवं कैलादेवी भाजपा मण्डल प्रभारी रमेश राजौरिया के सानिध्य में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता कैलादेवी भाजपा मण्डल अध्यक्ष राजेश पाल जादौन ने की।

बैठक के दौरान मुख्य अतिथि राजौरिया ने भाजपा राष्ट्रीय सदस्यता अभियान के बारे में विस्तार से बताते हुए कहां कि आप सभी को मिलकर कैलादेवी मण्डल में अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनाने हैं। तथा मण्डल से आने वाले सभी बूथ अध्यक्षों को अपने अपने बूथों पर विशेष ध्यान देना है।

बूथ अध्यक्षों को धन्यवाद देते हुए कहां कि आप लोगों के परिश्रम का ही नतीजा है जों आज हम सत्ता व संगठन में मजबूत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मण्डल अध्यक्ष राजेश पाल जादौन ने बताया कि भाजपा संगठन को मजबूत करने में सत्ता और संगठन एक दूसरे के पूरक हैं संगठन हमारा मजबूत है तों हमेशा सत्ता हमारी रहेंगी और सत्ता हमारे पास है तों संगठन हमारा मजबूत रहेगा तथा कैलादेवी मे सभी कार्यकर्ताओं से अधिक संख्या में सदस्य बनाने का आव्हान किया तथा

- **कार्यकर्ताओ की बैठक पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष एवं कैलादेवी भाजपा मण्डल प्रभारी रमेश राजौरिया के सानिध्य में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता कैलादेवी भाजपा मण्डल अध्यक्ष राजेश पाल जादौन ने की।**
- **कार्यकर्ताओं ने कैलादेवी मण्डल में अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनाने पर जोर देने को कहा**

कैलादेवी भाजपा मण्डल की तरफ से मण्डल प्रभारी राजौरिया को साफा, दुपट्टा, माला,व कैला मैया कि तस्वीर देकर स्वागत सम्मान किया।तथा आने वाले सभी कार्यकर्ताओं का मण्डल अध्यक्ष ने स्वागत सम्मान करते हुए कार्यक्रम का समापन किया ।

पदयात्रा की तेयारी जोर शोर से

गंगापुर सिटी । मां इन्द्रगढ सेवा समिति के तत्वावधान में मां इंदरगढ बिजासन माता की 20 वी पदयात्रा 9 सितम्बर 2024 सोमवार को पुरानी अनाज मंडी स्थित श्री सीताराम जी मंदिर से जावेगी।

समिति के सदस्य राकेश कुमार गर्ग ने बताया कि यात्रा 9 सितंबर 2024 को दोपहर 2 बजे पुरानी अनाज मंडी से प्रस्थान करेगी रात्रि विश्राम नवाना की ढाणी,10सितंबर 2024 मंगलवार को भोजन प्रसादी मलारना डूंगर धर्म कांटा पर होगी रात्रि विश्राम अजनोटी स्कूल,11 सितंबर 2024 बुधवार को भोजन प्रसादी रा.मा.वि., जीनापुर पर होगी रात्रि विश्राम बी.एड. कॉलेज रवांजना डूंगर,12 सितंबर 2024 गुरूवार को भोजन प्रसादी रा.मा.विद्यालय,बाबई पर होगी इन्द्रगढ मोड पर सायं 7बजे पहुंचेगी।

इन्द्रगढ मोड पर मां की आरती करी जावेगी एवं बैंड बाजो के साथ जोर शोर से मां का जुलूस इन्द्रगढ भवन, महारानी पैलेस पहुंचेगा।

12 सितंबर गुरुवार को रात्रि 9 बजे विशाल भजन संध्या महारानी पैलेस पूर्व चेयरमैन की धर्मशाला में होगी।

13 सितंबर शुक्रवार को विशाल भंडारा महारानी पैलेस पूर्व चेयरमैन की धर्मशाला में होगा।

समिति द्वारा यात्रा की तेयारी जोरशोर से की जा रही है। समिति पदाधिकारियो ने यात्री ठहराव स्थानो का निरिक्षण कर संबंधित भवन मालिको से स्वीकृति ली।

मैं आपसे अपील कर रही हूं। मैं एथलीट हूं, मैं पूरे देश की हूं। किस प्रदेश में चुनाव हो रहे हैं इससे मेरा कोई मतलब नहीं होता है। मैं बस इतना जानती हूं कि मेरे देश के किसान मुश्किल में हैं। – **विनेश फोगाट**

भारतीय रेसलर, भविष्य की रणनीति के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

समित द्रविड़

टीम इंडिया के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ के बेटे समित द्रविड़ को ऑस्ट्रेलिया 19 के खिलाफ आगामी बहु-प्रारूप घरेलू श्रृंखला के लिए भारत की 19 टीम में नामित किया गया है। यह पहली बार है जब समित को भारत की 19 टीम में नामित किया गया है। मोहम्मद अम्मान को 50 ओवर की टीम का कप्तान बनाया गया है। अम्मान मध्यक्रम के बल्लेबाज हैं और उत्तर प्रदेश (यूपी) के लिए घरेलू क्रिकेट खेलते हैं। चार दिवसीय श्रृंखला के लिए सोहम पटवर्धन को कप्तान घोषित किया गया है। पटवर्धन घरेलू क्षेत्र में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट क्रिकेट इतिहास का पहला टेस्ट इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया के मध्य 1877 में मेलबोर्न में खेला गया था। इसे ऑस्ट्रेलिया ने 45 रन से जीता।

बडोनी ने टी-20 की एक पारी में सर्वाधिक छक्कों का रिकॉर्ड तोड़ा

आर्य ने एक ओवर में छह छक्के लगाए

नई दिल्ली, 31 अगस्त। आयुष बडोनी (165) ने 19 छक्कों के साथ किसी टी20 पारी का नया रिकॉर्ड कायम किया तो वहीं प्रियांश आर्य (120) ने एक ओवर में छह छक्के लगाए जिससे साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स ने दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) में शनिवार को नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स के खिलाफ पांच विकेट पर 308 रन बनाये। यह टी20 मैच का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। भारतीय अंडर-19 टीम के खिलाड़ी आर्य ने साउथ दिल्ली की पारी के 12वें ओवर में छह छक्के लगाये लेकिन बडोनी ने उनसे ज्यादा आक्रामक बल्लेबाजी की। इंडियन प्रीमियर लीग में लखनऊ सुपरजायंट्स के लिए खेलने वाले बडोनी ने 19 छक्के जड़े जो टी20 क्रिकेट का नया रिकॉर्ड है। दायें हाथ के इस बल्लेबाज ने अपनी 55 गेंद की पारी में आठ चौके भी लगाये। टी20 मैच की किसी पारी में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रिकॉर्ड इससे पहले संयुक्त रूप से वेस्टइंडीज के क्रिस गेल और एस्टोनिया के साहिल चौहान के नाम था। दोनों बल्लेबाजों ने एक समान 18 छक्के लगाये थे। गेल ने बांग्लादेश प्रीमियर लीग के 2017 सत्र में ढाका डायनामाइट्स के खिलाफ रंगपुर राइडर्स के लिए 69 गेंदों में 146 रन की पारी में पांच चौकों के साथ 18 छक्के लगाए थे जबकि भारतीय मूल के चौहान ने इस साल जून में एक टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में साइप्रस के खिलाफ एस्टोनिया के लिए 41 गेंदों में 144 रन की पारी के दौरान 18 छक्के लगाए थे।

मेगा नीलामी में ये 3 खिलाड़ी बिक सकते हैं सबसे महंगे

नई दिल्ली, 31 अगस्त। आईपीएल 2025 का क्रिकेट फैंस को बेसब्री से इंतजार है। लेकिन उससे पहले टूर्नामेंट का मेगा ऑक्शन होना है, जिसमें कई टीमों के स्टार खिलाड़ी दूसरी टीम में शामिल हो सकते हैं। आईपीएल 2024 से पहले हुई मिनी ऑक्शन में मिचेल स्टार्क ने आईपीएल इतिहास का सबसे महंगा खिलाड़ी होने का रिकॉर्ड कायम किया था। स्टार्क को केकेआर ने 24.75 करोड़ रुपये की कीमत में खरीदा था। मेगा ऑक्शन में तीन खिलाड़ी स्टार्क का ये रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं।

रोहित शर्मा : भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान और मुंबई इंडियंस के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा को लेकर लगातार चर्चाएं हैं कि फ्रेंचाइजी उन्हें आईपीएल 2025 के लिए रिटेन नहीं करेगी। हालांकि, अब तक रोहित के रिलीज होने की आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। अगर रोहित शर्मा को रिलीज कर दिया जाता है और उनका नाम मेगा ऑक्शन में आता है, तो उन्हें खरीदने की होड़ सभी फ्रेंचाइजियों में देखने को मिलेगी।

फिल साल्ट : आईपीएल के पिछले सीजन में केकेआर के लिए खेलने वाले फिल सॉल्ट ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 12 मैचों में 39.55 की औसत और 182.01 के स्ट्राइक रेट से 435 रन बनाए थे। हालांकि, अभी कोलकाता की तरफ से उन्हें रिलीज करने की कोई आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है। लेकिन अगर केकेआर आईपीएल 2025 के लिए सॉल्ट को रिटेन नहीं करती है ।

सैम करन : इंग्लैंड के ऑलराउंडर सैम करन को पंजाब किंग्स ने आईपीएल 2023 में 18.50 करोड़ रुपये की कीमत में खरीदा था। इंग्लिश ऑलराउंडर ने कई मौकों पर पंजाब किंग्स की कमान भी संभाली है। ऐसे में पंजाब उन्हें रिलीज करेगी या रिटेन करेगा, इस बारे में तो कुछ नहीं कहा जा सकता है। हां अगर, पंजाब ने उन्हें रिटने नहीं किया तो सैम करन एक बार फिर महंगे बिक सकते हैं।

नोवाक जोकोविच अमेरिकी ओपन से बाहर

नई दिल्ली, 31 अगस्त। कार्लोस अल्कराज के बाहर होने के एक दिन बाद गत चैंपियन नोवाक जोकोविच भी चार सेट तक चले मुकाबले में हारकर अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट से बाहर हो गए लेकिन महिला वर्ग में मौजूदा चैंपियन कोको गॉफ अगले दौर में प्रवेश करने में सफल रही। अपना 25वां ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने की कवायद में लगे जोकोविच को ऑस्ट्रेलिया के 28वीं वरीयता प्राप्त एलेक्सी पोपिरिन ने6-4, 6-4, 2-6, 6-4 से हराया। जोकोविच ने मैच के बाद कहा,"ईमानदारी से कहूं तो यह मेरा अभी तक का सबसे खराब प्रदर्शन है।

यह मैच मेरे लिए किसी दुस्वप्न की तरह था। मैं अपने सर्वश्रेष्ठ के करीब भी नहीं खेल पाया।"' यह 2017 के बाद पहला अवसर है जबकि दूसरी वरीयता प्राप्त जोकोविच साल में एक भी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट नहीं जीत पाए। इससे पहले 2010 में भी ऐसा हुआ था। यही नहीं यह 2002 के बाद पहला अवसर है जबकि टेनिस के तीन दिग्गज खिलाड़ी जोकोविच, राफेल नडाल और रोजर फेडरर में से किसी ने भी किसी एक साल में ग्रैंड स्लैम ट्रॉफी हासिल नहीं की।

सुकांत सेमीफाइनल एवं मनदीप कौर क्वार्टरफाइनल में पहुंचे

पेरिस, 31 अगस्त। भारतीय बैंडमिंटन खिलाड़ी सुकांत कदम ने शनिवार को पेरिस पैरालंपिक 2024 खेलों की बैंडमिंटन स्पर्धा के सेमीफाइनल में तथा महिला खिलाड़ी मनदीप कौर ने क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली।

सुकांत कदम ने आज पुरुष एकल एसएच4 ग्रुप चरण में थाईलैंड के सिरिपोंग टीमारोप को सीधे गेम में 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में अपनी जगह बनायी। उन्होंने थाईलैंड के शटलर को 21-12 , 21-12 से हराया। महिला बैंडमिंटन खिलाड़ी मनदीप कौर ने महिला एकल एसएल3 ग्रुप चरण में शानदार जीत हासिल कर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। मनदीप ने मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया की विनोट सेलिन ऑरेली के खिलाफ पहला गेम 21-23 से हारने के बाद लगातार दो गेम 21-10 और 21-17 से जीते और मैच 2-1 से जीत कर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

इसी तरह पुरुष एकल एसएल3 ग्रुप चरण में भारतीय खिलाड़ी नितेश कुमार ने पेरिस पैरालिंपिक में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा एवं अगले दौर में जगह बनाई। उन्होंने थाईलैंड के बन्सन मोंगखोन को सीधे गेम में 2-0 से हराया। नितेश कुमार ने आज खेले गए मैच में मोंगखोन को 21-13 , 21-14 से हराया।

वहीं पुरुष एकल एसएल3 ग्रुप चरण के एक अन्य मुकाबले में मनोज सरकार नॉकआउट चरण के लिए क्वालीफाई नहीं कर सके। चीन के जियानयुआन यांग के खिलाफ 2-0 की जीत के बावजूद मनोज नॉकआउट चरणों के लिए क्वालीफाई नहीं कर सके। उन्हें अपने ग्रुप में तीसरा स्थान मिला।

ग्रुप से शीर्ष दो खिलाड़ी अगले दौर के लिए क्वालीफाई हुए। इसी तरह भारतीय खिलाड़ी तरुण ढिल्लन को आज खेले गए पुरुष एकल के एसएल4 ग्रुप चरण मैच में हार का सामना करना पड़ा। तरुण को फ्रांस के लुकास माजुर ने 2-0 से हराया। इस हार के साथ तरुण का पैरालंपिक अभियान समाप्त हो गया।

हरभजन सिंह की दो टूक, भारतीय टीम के पाकिस्तान जाने पर

नई दिल्ली, 31 अगस्त। अगले साल मार्च में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आयोजन किया जाएगा। वहीं चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी पाकिस्तान के पास है, हालांकि टीम इंडिया टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान जाएगी या नहीं इस पर अभी स्पष्ट नहीं हुआ है।

बीसीसीआई साफ कह चुका है कि भआरतीय खिलाड़ियों के पाकिस्तान जाने पर फैसला सरकार करेगी।वहीं, भारत के पूर्व दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने इस पूरे मामले पर बेबाक तरीके से अपनी राय रखी है। भज्जी का कहना है कि जब तक सुरक्षा चिंताएं दूर न हों तब

तक भारतीय खिलाड़ियों को पाकिस्तान बिलकुल नहीं जाना चाहिए। हरभजन ने स्पोर्ट्स तक से कहा कि, सुरक्षा को लेकर चिंताएं वहां रही हैं। अगर वहां खिलाड़ियों की सिक्योरिटी नहीं होगी तो मुझे नहीं लगता कि जाना चाहिए।

अगर वे कहते हैं कि टीमों को फुल सिक्योरिटी दी जाएगी और कोई दिक्कत नहीं है तो फिर जो सरकार सोचे वो ठीक है। दरअसल, ये सिर्फ क्रिकेट तक ही सीमित नहीं है। ये उसके पार है। मैं बतौर क्रिकेटर यही कह सकता हूं कि क्रिकेट खेलना है, खेलिए लेकिन वहां सुरक्षा को लेकर चिंता तो है। हमारे खिलाड़ियों को तब तक वहां नहीं जाना चाहिए, जब तक हमें लगे नहीं कि सिक्योरिटी बिलकुल सही है।

राजधानी

चार लोगों को नया जीवन दे गई कंवराई देवी

जोधपुर एम्स में हुआ अंगदान, एक किडनी और हृदय प्रत्यारोपण जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में हुआ

जयपुर (कासं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में प्रदेश में अंगदान एवं प्रत्यारोपण के कार्य को मजबूती के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है। शनिवार को प्रदेश में एक और अंगदान हुआ। एम्स जोधपुर में एक ब्रेन डेड मरीज के अंग दान किये गए।

जैतारण निवासी 46 वर्षीय कंवराई देवी गत 28 अगस्त को सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गईं थी। उन्हें

- **जबकि एक किडनी एम्स जोधपुर में तथा लीवर को जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में मरीज को प्रत्यारोपित किया गया**

उपचार के लिए एम्स जोधपुर के आपातकालीन विभाग में लाया गया। चिकित्सा प्रयासों के बावजूद 30 अगस्त को उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। अस्पताल प्रशासन की समझाइश के बाद साहस और करुणा का परिचय देते हुए कंवराई देवी के परिवार ने उनके अंगों को दान करने का निर्णय लिया। परिवार से लिखित सहमति प्राप्त होने के बाद अंगदान की प्रक्रिया शुरू की गई। संभावित प्राप्तकर्ताओं में प्रत्यारोपण के लिए दानकर्ता की किडनी, लीवर और हृदय को निकाला गया। एक किडनी एम्स जोधपुर को तथा दूसरी किडनी और हृदय एसएमएस अस्पताल जयपुर को तथा लीवर महात्मा गाँधी अस्पताल जयपुर को आवंटित किया गया।

अंगदान के बाद कंवराई देवी की पार्थिव देह को ससम्मान उनके परिजनों के सुपुर्द किया।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह के निर्देशन में अंगदान एवं प्रत्यारोपण के इस मानवीय कार्य को मंजिल तक पहुंचाया गया। सिंह ने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि राज्य सरकार के प्रयासों से प्रदेश में अंगदान की मुहिम सकारात्मक रूप से आगे बढ़ रही है और लोगों को नया जीवन मिल रहा है।

शुभ्रा सिंह ने बताया कि किडनी, लीवर और हृदय को पहले एम्स से जोधपुर एयरपोर्ट और फिर हवाई मार्ग से जयपुर भेजा गया। उसके बाद ग्रीन कॉरिडोर बनाकर किडनी और हृदय को जयपुर एयरपोर्ट से सड़क मार्ग से एसएमएस जयपुर तथा लीवर को महात्मा गाँधी अस्पताल जयपुर भेजा गया।

एसएमएस अस्पताल में वरिष्ठ प्रोफेसर सीटीवीएस डॉ. राजकुमार यादव एवं उनकी टीम ने हृदय प्रत्यारोपण तथा डॉ. शिवम प्रियदर्शी तथा डॉ. नीरज गंगवाल ने किडनी प्रत्यारोपण कर दो लोगों को नया जीवन दिया। महात्मा गांधी अस्पताल में डॉ. नमिष एन मेहता ने लीवर प्रत्यारोपण किया। ऑर्गन रिट्रीवल प्रक्रिया को एम्स जोधपुर के ऑर्गन ट्रांसप्लांट टीम द्वारा कार्यकारी निदेशक प्रो. जीडी पुरी, ट्रांसप्लांट टीम के अध्यक्ष प्रो. एएस संधू, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. दीपक झा और ट्रांस्प्लांट प्रोग्राम के नोडल ऑफिसर डॉ शिव चरण नावरिया की देखरेख में सटीकता के साथ अंजाम दिया गया।

ऑर्गन रिट्रीवल प्रक्रिया के बाद शव को पूरे सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ परिवार को सौंप दिया गया। पूरी प्रक्रिया के दौरान परिवार को अपनी आध्यात्मिक मान्यताओं का पालन करने का अवसर दिया गया। कंवराई देवी के परिजनों के जीवनदान के निर्णय, चिकित्सा पेशेवरों के समर्पण, एसएमएस अस्पताल और एम्स प्रशासन सहित पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों के सहयोग से चार लोगों को जीवन का उपहार मिला।

चार आरोपियों की जमानत डीजे ने रद्द की

जयपुर। जिले के सत्र न्यायालय ने रायसर थाना इलाके में घर में घुसकर सरिया, कुल्हाड़ी व लाठियों से एक परिवार पर जानलेवा हमला और छेड़छाड़ से जुडे 4 आरोपियों को जमवारामगढ़ के न्यायिक मजिस्ट्रेट की ओर से 15 जुलाई 2024 को दी गई जमानत आदेश रद्द कर दिया है।

सत्र न्यायाधीश अजीत कुमार हिंगर ने कहा कि मजिस्ट्रेट ने अपने क्षेत्राधिकार से बाहर जाकर आरोपियों को जमानत पर छोडने का आदेश दिया है। इस आदेश को विधि सम्मत नहीं कहा जा सकता। इसलिए मजिस्ट्रेट के आदेश को निरस्त कर आरोपियों को निर्देश दिए जाते हैं कि वह मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश हो और मजिस्ट्रेट उन्हें पुलिस थाना रायसर में दर्ज केस में पुन: जेल में दाखिल कराए।

अदालत ने यह आदेश आरोपियों की जमानत रद्द करने के प्रार्थना पत्र पर दिए।

पेपर लीक मामले में 5 और ट्रेनी एस.आई. को एस.ओ.जी. ने हिरासत में लिया

जयपुर (कासं)। राजस्थान पुलिस सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा-2021 के पेपर लीक मामले में एसओजी लगातार कार्रवाई कर रही है। इससे पेपर लीक के जरिए नकल कर थानेदार बने ट्रेनी थानेदारों में हड़कंप मचा हुआ है। एसओजी नकलची ट्रेनी थानेदारों को चुन-चुनकर शिकंजे में ले रही है। शनिवार को एसओजी ने आरपीए से पांच ट्रेनी एसआई को हिरासत में लिया है। एसओजी इन ट्रेनी एसआई से पूछताछ कर रही है। ट्रेनी एसआई में 3 पुरूष और दो महिला शामिल है। एसओजी ने आरपीएससी के पूर्व मेम्बर रामू राम राईका के बेटे व बेटी को भी पकड़ा है। दोनों ने एसआई भर्ती में अच्छी रैंक प्राप्त की थी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार एसओजी की टीम आज सुबह करीब 11 बजे राजस्थान पुलिस अकादमी पहुंची और पूर्व की जांच के आधार पर वहां पर ट्रेनिंग कर रहे पांच एसआई को हिरासत में ले लिया। इनको एसओजी कार्यालय लाकर पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के बाद इनकों अरेस्ट किया जा सकता है।

- **अब तक 33 ट्रेनी एसआई और 17 नकल माफिया गिरफ्तार**

एसओजी सूत्रों ने बताया कि शनिवार को आरपीए से पांच ट्रेनी एसआई को हिरासत में लिया है। अब तक की जांच में मिले तथ्यों को लेकर उनसे पूछताछ की जा रही है। साक्ष्यों के मिलान के बाद आरोपियों को अरेस्ट किया जाएगा। हिरासत में लिए गए ट्रेनी एसआई में आरपीएससी के पूर्व मेम्बर रामू राम राईका का बेटा- बेटी भी शामिल है। एसओजी सूत्रों की मानें तो एसआईटी के गठन के बाद फरवरी-मार्च के महीने से एसआई पेपर लीक भर्ती परीक्षा में लिप्त नकलची थानेदारों और नकल माफिया की धरपकड करना शुरू कर दिया था जो कि लगातार जारी है। सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा में अब तक कुल 33 ट्रेनी सब इंस्पेक्टर गिरफ्तार हो चुके हैं। इनमें एक की जमानत हो गई, बाकी जेल में हैं। इसके अलावा तीन ऐसे गिरफ्तार आरोपी हैं, जिन्होंने एसआई भर्ती में चयन के बावजूद सर्विस ज्वॉइन नहीं की। इनके अलावा जगदीश बिश्नोई, ओमप्रकाश ढाका, हर्षवर्धन सिंह और पौरव कालेर सहित 19 नकल माफियाओं को भी एसओजी गिरफ्तार कर चुकी है।

राष्ट्र निर्माण में बनें सहयोगी युवा : बागड़े

जयपुर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के राज्य मुख्य आयुक्त निरंजन आर्य की अगुवाई में स्काउट गाइड शिष्टमंडल ने राजस्थान के नव नियुक्त राज्यपाल हरिभाऊ बागडे को संरक्षक बैज से अलंकृत करते हुए शिष्टाचार भेंट की।

इस अवसर पर राजस्थान भारत स्काउट व गाइड के राज्य मुख्य आयुक्त निरंजन आर्य ने राज्यपाल को प्रदेश स्काउट गाइड संगठन के संरक्षक बैज से अलंकृत किया। इससे पूर्व राज्य मुख्य आयुक्त निरंजन आर्य ने स्मृति चिन्ह, राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला ने पुष्प गुच्छ व राज्य सचिव डॉक्टर पी.सी. जैन ने स्कार्फ पहना कर राज्यपाल का स्वागत व अभिनंदन किया। राज्यपाल बागडे ने स्काउटिंग द्वारा प्रदेश में किए जा रहे कार्यों पर विस्तृत चर्चा कर प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश की युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में अग्रसर करने और राष्ट्र को मजबूत बनाने में ऐसे ही सह-शैक्षिक संगठन की आवश्यकता है।

राजस्थान भारत स्काउट व गाइड के राज्य मुख्य आयुक्त निरंजन आर्य ने राज्यपाल को प्रदेश स्काउट गाइड संगठन के संरक्षक बैज से अलंकृत किया।

बागडे ने कहा कि देश की समृद्धि के लिए युवा युवतियों को राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनना होगा।

इस अवसर पर आर्य ने राज्यपाल को स्काउट गाइड संगठन की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए प्रदेश की अभिनव व नवीन गतिविधियों एवं प्रदेश के स्काउट एवं गाइड्स द्वारा सुगम मतदान, पर्यावरण चेतना, सघन वृक्षारोपण, स्वच्छ भारत अभियान इत्यादि में किए जा रहे विशिष्ट कार्यों से अवगत कराया।

इस अवसर पर राज्य मुख्य आयुक्त निरंजन आर्य, राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला, राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त बन्ना लाल, सुयश लोढ़ा उपस्थित थे।

शोधार्थियों को कराया फील्ड विजिट

जयपुर (कासं)। राजस्थान विश्वविद्यालय के व्यावसायिक प्रशासन विभाग में शोधार्थियों को शनिवार को रिसर्च फील्ड विजिट "जयपुर रग्स" के तरफ से मानपुरा माचेड़ी गांव में कराया गया। यहां 'रग्स' गांव के रहने वाले लोगों द्वारा तैयार किया जाता हैं और उसके बाद शोधार्थियों को मानसरोवर में फाउंडर से परिचय करवाया गया। साथ में विशेष सत्र और रग्स शो भी शोधार्थियों के लिए करवाया गया।

हिस्ट्रीशीटर को थाने में प्रताड़ित करने पर जवाब मांगा

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने झोटवाडा थाने के हिस्ट्रीशीटर को पुलिस हिरासत के दौरान प्रताडित और अमानवीय कृत्य करने से जुड़े मामले में मुख्य सचिव, एसीएस होम, डीजीपी, पुलिस कमिश्नर, डीसीपी पश्चिम और चित्रकूट थानाधिकारी से जवाब मांगा है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश उजागर सिंह की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता मिथिलेश कुमार ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता को गत दिनों पुलिसकर्मियों ने गिरफ्तार कर चित्रकूट थाने में रखा था। यहां उसे नग्न कर प्रताड़ित किया गया। इस दौरान उससे पुलिस से जुड़े और भविष्य में अपराध नहीं करने को लेकर नारे लगाए गए। वहीं इसका 17 सेकंड का वीडियो भी बनाया गया।

माली (सैनी) समाज ने शनिवार को मुम्बई में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का स्वागत समारोह आयोजित किया। समारोह को संबोधित करते हुये मु.मंत्री ने कहा कि विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में प्रवासी राजस्थानियों की अहम भूमिका है। मु.मंत्री वर्तमान में ''राइज़िंग राजस्थान'' समिट के प्रमोशन के सिलसिले में मुम्बई में हैं तथा प्रदेश सरकार इस समिट को प्रमोट करने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

मुम्बई के माली समाज ने मुख्यमंत्री भजनलाल का स्वागत किया

- **मुख्यमंत्री ''राइज़िंग राजस्थान'' में प्रवासी राजस्थानियों को बड़ी संख्या में भागीदारी करने का आव्हान किया।**
- **मुख्यमंत्री ने कहा, विकसित राजस्थान का संकल्प साकार करने में प्रवासी राजस्थानियों की अहम् भूमिका है।**

मुंबई/जयपुर, 31 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि देश और दुनिया में रह रहे प्रवासी राजस्थानियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों और कार्यों से राजस्थान का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि विकसित राजस्थान का संकल्प साकार करने में प्रवासी राजस्थानियों की भी अहम भूमिका है। शर्मा शनिवार को मुंबई में माली (सैनी) समाज द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। राज्य सरकार प्रदेश में निवेश करने वाले निवेशकों को हर संभव सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए कृतसंकल्पित है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 9 से 11 दिसंबर तक आयोजित होने वाले 'राइज़िंग राजस्थान' सम्मेलन में प्रवासी राजस्थानी भी अधिक से अधिक संख्या में भागीदार बनें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प में अंत्योदय की भावना निहित है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का कर्तव्य है कि जरूरतमंद को राहत पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करें और उन्हें केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाएं।

उन्होंने कहा कि प्रवासी राजस्थानी विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति एवं विकास के साथ समाज सेवा में भागीदारी निभाकर प्रदेश को गौरवान्वित कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में मुंबई माली (सैनी) समाज के विभिन्न गणमान्यजन उपस्थित रहे।

जोधपुर में एक और नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म

- **महात्मा गांधी अस्पताल दुष्कर्म काण्ड पर चल रहे विरोध प्रदर्शनों के बीच यह मामला सामने आने से जनाक्रोश भड़क उठा है।**
- **अगस्त महीने में जोधपुर में दुष्कर्म के पांच केस सामने आ हो चुके हैं।**
- **मामले में पुलिस ने पीड़िता के बयान दर्ज करवाकर उसका मैडिकल करवाया और जांच शुरु कर दी।**

जोधपुर, 31 अगस्त (कास)। जोधपुर शहर में नाबालिग से दुष्कर्म की वारदात ने पूरे शहर में आक्रोश पैदा कर दिया है। जोधपुर के पूर्वी इलाके में घर लौट रही छात्रा के साथ दो युवकों ने दुष्कर्म और मारपीट की। जोधपुर में बीते 18 दिनों में दुष्कर्म की यह पांचवीं घटना है।

अगस्त महीने में जोधपुर में दुष्कर्म के पांच केस सामने आ हो चुके हैं। कमिश्नरेट के जिला पूर्व के एक थाना क्षेत्र में दरिंदे ने 17 साल की किशोरी को दुष्कर्म का शिकार बनाया। किशोरी फॉर्म भरकर वापस लौट रही थी। रास्ते में दो युवक उसे बहला-फुसलाकर ले गए। एक कमरे में युवक ने रेप किया, जबकि अन्य युवक ने उसके साथ मारपीट की।

किशोरी ने घर जाकर अपने परिजनों को घटना बताई। इस पर परिजन उसे लेकर थाने पहुंचे और मामला दर्ज कराया। पुलिस ने तत्परता दिखाई और दो आरोपियों को हिरासत में ले लिया। पुलिस के मुताबिक पीड़ित के परिजनों ने रिपोर्ट में आरोप लगाया कि किशोरी शुक्रवार को फॉर्म भरने गई थी। लौटते वक्त रास्ते में उसे दो युवक मिले। वे किशोरी को बाइक पर बैठाकर सुनसान जगह पर ले गए। वहां पर तीन युवक पहले से मौजूद थे। इनमें से एक युवक ने किशोरी से रेप किया। इस मामले में पुलिस ने पीड़ित के बयान दर्ज करवाकर उसका मेडिकल करवाया। डी.सी.पी. आलोक श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। अब पुलिस पीड़ित के मजिस्ट्रेट के सामने बयान करवाएगी।

राज्य मेला प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष पूर्व राज्यमंत्री रमेश बोराणा ने नगर में पिछले 18 दिन में 5 वीं बलात्कार की शर्मनाक घटना पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि देश विदेश में अपनी संस्कृति व सद्भाव के लिए जाने वाले जोधपुर के सुनहरे चेहरे पर सरकार व प्रशासन के नकारेपन ने कालिख पोत दी है जोधपुर शहर में भय व दहशत का माहौल है, विशेष रूप से बच्चियें व महिलायें आतंकित है। शहर में भादो मास के विभिन्न महिला भागीदारी के मेले-उत्सव दुष्कर्मियों के खौफ से प्रभावित हो रहे हैं।

बोराणा ने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार व पुलिस का इक़बाल ख़त्म हो गया है।

जन प्रतिनिधियों पर इन महिला अत्याचार की घटनाओं का कोई असर नहीं हो रहा है, न ही वे इसे गंभीरता से ले रहे हैं। बोराणा ने कहा कि राज्य की भजनलाल सरकार अपनी निंद्रा तोड़े और प्रदेशवासियों को अपने व सरकार के होने का अहसास कराते हुए क़ानून व्यवस्था को प्रभावी करें, अन्यथा जनता अपनी सुरक्षा के लिए ख़ुद सड़कों पर उतर आई तो ज़िम्मेदार सरकार ही होगी।

साइबर फ्रॉड केस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुनवाई के दौरान अधिवक्ता प्रतीक कासलीवाल ने अदालत को बताया कि फरवरी 2022 में याचिकाकर्ता ने साइबर पुलिस थाने में उसकी सिम को स्वैप कर 60 लाख रुपए के साइबर फ्रॉड का केस दर्ज कराया था। मामले की जांच में पता चला कि उसकी रकम पश्चिम बंगाल व उडीसा के छोटे-छोटे खातों में जमा हुई और पूरा रुपया उसी दिन कैश करा लिया गया। पुलिस को अनुसंधान में आरोपियों के नाम भी पता चल गए हैं, लेकिन ना तो उनसे रुपए की रिकवरी हुई और ना ही उनकी गिरफ्तारी ही हुई।

मामले में पुलिस ने मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनी को भी नोटिस दिया, लेकिन उसने दो साल में यह नहीं बताया कि उसने किसे सिम जारी की थी। ऐसे में याचिकाकर्ता की एफ.आई.आर. पर उचित कार्रवाई के निर्देश दिए जाए।

प्र.मंत्री मोदी के स्वघोषित...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रकट हुये तथा केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के नई दिल्ली स्थित आवास पर उन्हें फूल भेंट करते हुये नज़र आये। इसके एक दिन बाद चिराग स्वयं भी गृहमंत्री से मिले तथा यह आशंका जताई कि भाजपा नेता उनके (चिराग) पर कतरने के लिये पारस का उपयोग कर सकते हैं। इस बीच, भाजपा विधायक मुकेश रोशन ने यह दावा करते हुये बिहार के राजनैतिक माहौल में खलबली पैदा कर दी कि एल.जे.पी. (आर.वी.) के पाँच में से तीन सांसद भाजपा में शामिल होने वाले हैं।

सर्वविदित है कि चिराग अब भी कहते हैं कि ''धरती की कोई भी ताकत प्रधानमंत्री मोदी से उनकी नज़दीकी को प्रभावित नहीं कर सकती।'' लेकिन 2025 में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों तक के महीनों में राजनैतिक हवाएं जिस दिशा में बहेंगी, उसको लेकर वे चिन्तित भी दिखाई दे रहे हैं। चिराग की उलझनों की इस स्थिति के कुछ संकेत उनके हाल ही के बयानों के जरिये सामने आये हैं। जब एक इन्टरव्यू में उनसे पूछा गया कि वे अपने चाचा पारस तथा आर.जे.डी. नेता तेजस्वी यादव में से किसका चयन करना चाहेंगे, तो वे तेजस्वी यादव के बारे में प्रशंसा एवं सम्मान के लहजे में बोले। जहाँ तक झारखंड विधानसभा चुनावों का प्रश्न है, चिराग घोषणा कर चुके हैं कि उनकी पार्टी अपने बलबूते पर चुनाव लड़ेगी, भले ही उन्होंने यह जोड़ दिया हो कि ''बेहतर यह होगा कि भाजपा के साथ कोई चुनाव-पूर्व समझौता हो जाये।'' हाल ही के दिनों में वे उस व्यथा को भी अभिव्यक्त कर रहे हैं, जो उन्हें उस समय महसूस हुई थी, जब उनके पिता राम विलास पासवान की मृत्यु के बाद, भाजपा ने उन्हें असहाय स्थिति में छोड़कर, उनके चाचा पारस को अपनाया था। अभी हाल ही एक ट्वीट में चिराग ने कहा, ''जब मेरे अपने खून ने ही मेरी पीठ में छुरा भोंक दिया, तो मैं बाहर के लोगों की शिकायत क्या करुँ।''

8 सितम्बर....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की विदेश यात्रा के सफल रहने की उम्मीद करते हैं।

राहुल की यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव हो रहे हैं और डैमोक्रैटिक पार्टी की तरफ से जो बाइडन की जगह कमला हैरिस रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डॉनल्ड ट्रम्प को चुनौती दे रही है। मई 2023 में गांधी 6 दिन की यात्रा पर अमेरिका गए थे, तब उन्होंने 6 शहरों का दौरा किया था और एन.आर.आई. समुदाय, उद्योगपतियों व पत्रकारों से वार्ता की थी। इस दौरान वे भारतीय लोकतंत्र के भविष्य, बोलने की आज़ादी और सतत आर्थिक विकास पर अपना पक्ष रखा था।

राहुल गांधी ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर जारी एक संदेश में कहा देश मे युवाओं के बीच बढ़ता आत्महत्या दर बहुत ही दुखद और चिंताजनक है। पिछले दशक में जबकि 0-24 आयु के बच्चों की जनसंख्या 58.20 करोड़ से घटकर 58.10 करोड़ हो गई, छात्र आत्महत्याओं की संख्या चौंकाने वाले रूप से 6,654 से बढ़कर 13,044 हो गई।

उन्होंने कहा भारत आज सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है- अफसोस की बात है कि इस शक्ति को सही इस्तेमाल की सुविधाओं की जगह उन्हें कठिनाइयां और मजबूरियां मिल रही हैं। ये सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत ही गहरी समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है। भयंकर बेरोज़गारी, पेपर लीक, शिक्षा में भ्रष्टाचार, महंगी पढ़ाई, सामाजिक उत्पीड़न, आर्थिक असमानता, माता-पिता का दबाव- आज के विद्यार्थी ऐसी अनगिनत समस्याओं से जूझते हुए सफलता तलाशने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्होंने सरकार से इस समस्या का निदान निकालने का आग्रह करते हुए कहा मेरी सरकार से अपेक्षा है कि वह विद्यार्थियों और युवाओं के इस कठिन रास्ते को आसान करने की हर संभव योजना बनाए-उनके रास्ते में बाधाएं नहीं, उन्हें समर्थन पहुंचाएं। राहुल गांधी ने ब्च्चों के माता-पिता से भी अनुरोध करते हुए कहा विद्यार्थियों के माता-पिता और अभिवावकों से अनुरोध है की उन्हें मानसिक समर्थन और प्रोत्साहन दें और देश के युवा साथियों से अपील है समस्याओं के विरुद्ध आवाज़ उठाओ, सवाल करो, अपना हक़ मांगो- डरो मत। मैं आपके साथ खड़ा हूं और आपके अधिकार दिलाने के लिए सड़क से संसद तक लड़ता रहूंगा।

अजमेर में विमंदित युवती से पड़ौसी युवक ने दुष्कर्म किया

- **पुलिस ने जांच शुरु की और आरोपी युवक व युवती का अस्पताल में मैडिकल करवाया।**
- **पुलिस ने बताया, गंज थाना क्षेत्र में रहने वाले एक व्यक्ति ने अपनी 20 वर्षीय विमंदित पुत्री के गायब होने की रिपोर्ट दी थी।**

लोगों ने युवक की धुनाई कर पुलिस के हवाले किया

अजमेर, 31 अगस्त (कासं)। अजमेर के गंज थाना क्षेत्र में एक विमंदित युवती से पड़ौसी युवक द्वारा बहला-फुसलाकर ले जाने और उसके साथ दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। संदिग्ध अवस्था में युवती के साथ मिलने पर लोगों ने युवकी की जमकर पिटाई कर दी और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

क्लॉक टावर थाना प्रभारी दिनेश कुमार ने बताया कि गंज थाना क्षेत्र में रहने वाले एक व्यक्ति ने रिपोर्ट दी कि उसकी 20 वर्षीय मंदबुद्धि पुत्री लापता है। युवती की आस-पास के मौहल्ले में तलाश की गई। जांच में सामने आया कि पड़ौस में रहने वाला युवक उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया था। पास ही दोनों संदिग्ध हालत में मिले, जिसे देख क्षेत्रवासियों का गुस्सा भड़क उठा और उन्होंने युवक की जमकर पिटाई कर दी। मारपीट के बाद आरोपी युवक को पुलिस के हवाले कर दिया। यह घटना अलसुबह तीन बजे की है, युवती के परिजन उसे घर में न पाकर आसपास के क्षेत्र में उसकी खोजबीन में जुट गये थे।

एस.पी. देवेंद्र कुमार विश्नोई ने कहा कि समाज में ऐसी घटनाएं नैतिक पतन की ले जाने वाली होती है। उन्होंने गंज थाना प्रभारी के अवकाश पर होने के कारण मामले की जांच क्लॉक टावर थाना प्रभारी दिनेश कुमार को सौंपी है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी युवक व मंदबुद्धि युवती का जे.एल.एन. अस्पताल में मैडिकल करवाया है। पुलिस पकड़े गए आरोपी युवक से पूछताछ कर मामले की जांच में जुटी है।

'चीन के निवेश की समीक्षा हो '

नई दिल्ली, 31 अगस्त। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने चीन के साथ भारत के जटिल रिश्तों पर बात करते हुए कहा कि भारत अकेला ऐसा देश नहीं है जिसे चीन के साथ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। नई दिल्ली में एक सत्र को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री ने कहा, हमारे लिए सीमा पर मुश्किलों के अलावा चीन एक जटिल समस्या है, मगर हम दुनिया के एकमात्र देश नहीं हैं जो चीन पर बहस कर रहे हैं। यूरोप जाएं और पूछें कि आज उनके प्रमुख आर्थिक या राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों में क्या है? यह चीन ही है। अमेरिका भी चीन के प्रति बहुत सजग है। जयशंकर ने इस बात पर भी जोर देते हुए कहा कि भारत में चीन से जुड़े निवेशों की समीक्षा होनी चाहिए।

जयशंकर ने यह भी कहा कि भारत की समस्याएं चीन के साथ विशेष हैं, जो वैश्विक चिंताओं से भी परे हैं। उन्होंने कहा, ''दशकों पहले दुनिया ने चीन में समस्याओं को नजरअंदाज कर दिया था। अब सभी देशों को समस्या का सामना करना पड़ रहा है। भारत को चीन के साथ एक खास समस्या है, जो बाकी दुनिया की सामान्य चीन समस्या से ऊपर है। इस स्थिति के मद्देनजर, भारत को उचित सावधानियां बरतनी चाहिए।''

भारतीय महिला निशानेबाज़, रुबीना फ्रांसिस ने शनिवार को पेरिस पैरालिंपिक 2024 खेलों की निशानेबाजी स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। फ्रांसिस ने महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच1 के फाइनल में 211.1 के स्कोर के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। पिस्टल स्पर्धा में पदक जीतने वाली रुबीना पहली भारतीय पैरा निशानेबाज एथलीट बन गई हैं। भारत ने टोक्यो पैरालंपिक में निशानेबाजी में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक जीते थे। पेरिस पैरालंपिक में भारत एक स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक जीत चुका है। पेरिस पैरालंपिक में भारत का निशानेबाजी में यह चौथा और कुल मिलाकर पांचवां पदक है।

यू.डी.एच...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अदालत ने 6 सितंबर 2023 को जांच अधिकारी को बदलने का निर्देश देते हुए याचिकाकर्ता को सुनवाई का पूरा मौका देने के लिए कहा था।

वहीं जांच छह महीने में पूरी नहीं होने की स्थिति में उसके प्रतिवेदन दिए जाने पर बहाल करने पर विचार करने का निर्देश दिया था। हाईकोर्ट के आदेश के पालन में डी.एल.बी. निदेशक ने 26 फरवरी 2024 को याचिकाकर्ता को बहाल करने की सिफारिश की। वहीं याचिकाकर्ता ने 29 फरवरी 2024 को यू.डी.एच. विभाग में अपना प्रतिवेदन दिया, लेकिन प्रमुख यू.डी.एच. सचिव ने डिस्कस करने के नाम पर उसके प्रतिवेदन पर पांच महीनों में भी कोई कार्रवाई नहीं की है। जबकि सी.एस. कह चुके हैं कि डिस्कस के नाम पर किसी भी फाइल को नहीं रोका जाएगा। इसलिए अदालती आदेश की पालना करवाई जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

'एक दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत की वृद्धि हुयी'

- **प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 10 सालों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। पिछले एक दशक में भारत ने गरीबी कम करने में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है।**
- **प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक दशक में देश की उपलब्धियों को देखते हुए भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा है। यह आत्मविश्वास भारत के विकास और सुधारों में एक नए विश्वास को दर्शाता है।**

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत के मुकाबले दुनिया की अर्थव्यवस्था में 35 फीसदी का इजाफा ही हुआ है

नयी दिल्ली 31 अगस्त (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि पिछले एक दशक में देश की अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि इसके मुकाबले में दुनिया की अर्थव्यवस्था 35 फीसदी ही बढ़ी है।

मोदी ने दिल्ली में ई.टी. वर्ल्ड लीडर्स फोरम में भारत की आर्थिक प्रगति, गरीबी उन्मूलन और बुनियादी ढांचे के विकास पर रोशनी डालने के साथ ही पिछले एक दशक में भारत की प्रगति और लोगों के जीवन में आए सकारात्मक बदलावों के बारे में बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 10 सालों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। पिछले एक दशक में भारत ने गरीबी कम करने में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 सालों में भारत की अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत से ज्यादा का इजाफा हुआ है जो लगातार विकास का नतीजा है जिसका वादा किया गया था। उन्होंने भरोसा दिलाया कि विकास की यह रफ्तार भविष्य में भी जारी रहेगी। ये विकास सिर्फ वादा नहीं, बल्कि एक हकीकत है जो आगे भी बनी रहेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म का मंत्र सरकार के कामकाज का आधार रहा है। इस मंत्र के तहत कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। इससे भारतीयों के जीवन में बड़ा बदलाव आया है। उन्होंने कहा हम भारतीयों के जीवन में एक बड़ा बदलाव लाने में कामयाब हुए हैं। इन सुधारों से देश में जीवन स्तर बेहतर हुआ है और प्रगति को गति मिली है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक दशक में देश की उपलब्धियों को देखते हुए भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा है। यह आत्मविश्वास भारत के विकास और सुधारों में एक नए विश्वास को दर्शाता है। कई देशों में जहां सरकारों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वहीं भारत की स्थिति अलग है। भारत के युवाओं और महिलाओं ने निरंतरता और राजनीतिक स्थिरता के लिए वोट दिया है, जो चल रही प्रगति और स्थिर सरकार के प्रति उनके समर्थन को दर्शाता है।

मोदी ने कहा कि भारत की उपलब्धियां अब वैश्विक सुर्खियां बन गई हैं। पिछले एक दशक में 25 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी से बाहर निकले हैं जिससे एक नए मध्यम वर्ग का उदय हुआ है। जहां एक तरफ गरीबों के पास अपनी आकांक्षाएं थीं, वहीं दूसरी तरफ उन्हें बैंक खाते और बुनियादी सुविधाओं जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता था। उन्होंने सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा, हमने गरीबों को सशक्त बनाने का रास्ता चुना और इसके चलते काफी बदलाव आया है।

मोदी ने कहा कि 100 दिनों से भी कम समय में सरकार ने गरीबों, महिलाओं, युवाओं और किसानों को लाभान्वित करने वाले महत्वपूर्ण सुधारों को लागू किया है।

इन सुधारों में उच्च उपज वाले बीजों को पेश करना और 11 लाख नई लखपति दीदी बनाना शामिल है।

कमला हैरिस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करना है। ट्रम्प का समर्थन उनके वोट बैंक में कायम है। उनके 64 प्रतिशत मतदाता उनकी नीतियों की वजह से उनके साथ हैं। आर्थिक प्रबंध के मुद्दे पर ट्रम्प को पसंद किया जा रहा है पर गर्भपात संबंधी नीति के मुद्दे पर हैरिस को समर्थन 31 प्रतिशत से बढ़कर 47 प्रतिशत हो गया है। वर्ष 2022 में आए सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद यह महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है।

इस पोल में अमेरिका के 425 वयस्कों और 3562 रजिस्टर्ड वोटर्स ने भाग लिया था जो कि राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ में भारी बदलाव है। निर्दलीय प्रत्याशी रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनिया ने 23 अगस्त को प्रचार समाप्त कर दिया था, उन्हें 6 प्रतिशत समर्थन मिला है।

चेन्नई के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सीज किए गए इन ड्रग्स को मराईमलाई नगर पुलिस स्टेशन में रखा गया है। वहीं, तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली स्थित नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एक छात्रा ने वाई-फाई तकनीशियन पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। इसे लेकर सैकड़ों छात्रों ने शुक्रवार को धरना दिया। छात्रा के साथ यह घटना तब हुई, जब शहर के बाहरी इलाके थुवाकुडी में परिसर के अंदर महिला छात्रावास के कमरे में अकेली थी। छात्रों के अनुसार, कॉन्ट्रैक्ट के आधार पर कार्यरत तकनीशियन की पहचान जी. कथिरेसन के रूप में हुई, जो गुरुवार सुबह वाई-फाई राउटर को ठीक करने के लिए पीड़िता के कमरे में गया था। रिपोर्ट के मुताबिक, तकनीशियन ने कथित तौर पर छात्रा के सामने कुछ इशारे किए। जब इंजीनियरिंग स्टूडेंट ने हॉस्टल के अधिकारियों के पास शिकायत दर्ज कराई, तो महिला छात्रावास वार्डन की ओर से उस पर असंवेदनशील टिप्पणी की गई। महिला हॉस्टल वार्डन ने पीड़िता के पहनावे की भी आलोचना की, जिससे छात्रों में आक्रोश व्याप्त हो गया। छात्रा के माता-पिता ने तिरुवरम्बुर में ऑल विमेन पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज की, जिसके आधार पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 332(3) और 75(1) के साथ-साथ तमिलनाडु महिला उत्पीड़न निषेध अधिनियम की धारा 4 के तहत मामला दर्ज किया।

अतिरिक्त महाधिवक्ता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के अनुसार पद्मेश मिश्रा के पास वकालत करने का अधिक से अधिक पांच वर्ष का अनुभव है। याचिकाकर्ता के अनुसार राज्य सरकार ने वाद नीति में संशोधन केवल और केवल इसलिये किया है ताकि वह मनमाने तरीके से उपर वर्णित अधिवक्ता को अतिरिक्त महाधिवक्ता घोषित कर सके, जबकि क्लॉज़14.4' अभी भी लागू है।

याचिकाकर्ता का कहना है राज्य सरकार ने जो नया संशोधन लागू किया है उससे ऐसा लगता है कि क्लॉज़ 14.4 निष्प्रभावी हो गया है जबकि उसे संशोधन उसे हटाया नहीं गया है। याचिका में कहा गया है कि वाद नीति, 2018 से पूर्व वाद नीति,2011 लागू थी, जिसमें भी 10 वर्ष से कम अनुभव रखने वाले अधिवक्ता को भी अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद पर नियुक्त किया जा सकता था, परंतु 2018 में इस नीति में संशोधन किया गया कि अतिरिक्त महाधिवक्ता के पद के लिये उम्मीदवार अधिवक्ता को हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में कम से कम 10 वर्ष का अनुभव होना चाहिये।

याचिकाकर्ता का कहना है कि उपरोक्त वर्णित अधिवक्ता को 20 अगस्त को ही पैनल लॉयर नियुक्त किया गया था क्योंकि हो सकता है कि नियुक्ति के दिन तक उन्होंने पद को पाने के लिये आवश्यक पांच वर्ष का अनुभव अर्जित कर रखा था, परंतु हैरानी की बात है कि तीन दिन बाद ही कैबिनेट से मंजूरी प्राप्त करके वाद नीति में संशोधन किया गया और उसी दिन इन्हें अतिरिक्त महाधिवक्ता घोषित किया गया।

याचिकाकर्ता का कहना है कि यह पूरी प्रक्रिया मनमाने तरीके से अपनाई गई प्रक्रिया प्रतीत होती है क्योंकि संशोधन के बाद जोड़े गए 'क्लॉज़ 14.8' ऐसा कोई भी नियम नहीं दर्शाता, जिससे उम्मीदवार अधिवक्ता की वकालत के क्षेत्र में योग्यता निर्धारित की जा सके। याचिकाकर्ता का तो यह तक कहना है कि उपरोक्त वर्णित अतिरिक्त महाधिवक्ता को नियुक्त करने से पूर्व राज्य के महाधिवक्ता से ही सलाह नहीं ली गई थी, जो कि वाद नीति के 'क्लॉज़ 14.2' के अनुसार आवश्यक हैं। इसके अलावा वाद नीति के 'क्लॉज़ 14.5' और 'क्लॉज़ 14.7' में वर्णित छंटनी के लिये आवश्यक प्रक्रिया को दो दिन में पूरा नहीं किया जा सकता , इससे स्पष्ट होता है राज्य सरकार ने जल्दबाजी में यह नियुक्ति की है।

उन्होंने कहा कि सरकारी अधिवक्ता नियुक्त किए जाने की प्रक्रिया स्पष्ट और साफ होनी चाहिये, जो इस मामले में नहीं अपनाई गई है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908